MERIKHETI

मेरीखेती

फ़रवरी 2026 I मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 11
बागवानी फसलें	12 - 20
मशीनरी	21 - 39
कृषि सलाह	39 - 40
पशुपालन–पशुचारा	41 - 45

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

फरवरी माह: खेती के संतुलन और तैयारी का महत्वपूर्ण समय

भारतीय कृषि चक्र में फरवरी का महीना विशेष महत्व रखता है। यह वह समय होता है जब रबी फसलें अपने विकास के निर्णायक चरण में होती हैं और साथ ही आगामी ज़ायद एवं खरीफ फसलों की तैयारी भी शुरू हो जाती है। ऐसे में किसानों के लिए यह महीना सतर्कता, संतुलन और सही निर्णय लेने का होता है।

फरवरी में गेहूं, सरसों, चना, मटर जैसी रबी फसलों में सिंचाई, निराई-गुड़ाई और रोग-कीट नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है। गेहूं की फसल में बालियां निकलने और दाना भरने की अवस्था इसी समय आती है, जिसके लिए दूसरी या तीसरी सिंचाई अत्यंत जरूरी मानी जाती है। सरसों में भी दाना भराव के लिए पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। इस दौरान माहू, तना छेदक और फफूंद जनित रोगों पर नजर रखना और आवश्यकता अनुसार कीटनाशक या जैविक उपाय अपनाना जरूरी है।

फरवरी का महीना आलू, प्याज, गन्ना और कुछ सब्जियों की खुदाई और कटाई के लिए भी उपयुक्त होता है। किसान इस समय उपज को सुरक्षित भंडारण और बेहतर बाजार मूल्य के लिए सही समय पर कटाई करें, ताकि नुकसान से बचा जा सके।

इसके साथ ही यह महीना ज़ायद फसलों जैसे मूंग, उड़द, मक्का और गर्मी की सब्जियों की बुवाई के लिए खेत तैयार करने का भी होता है। खेत की गहरी जुताई, समतलीकरण और जैविक खाद का प्रयोग भूमि की उर्वरता बनाए रखने में सहायक होता है।

कुल मिलाकर, फरवरी का महीना किसानों के लिए फसल प्रबंधन और भविष्य की तैयारी दोनों का संतुलित अवसर प्रदान करता है। यदि इस समय वैज्ञानिक तरीके से कृषि कार्य किए जाएं, तो न केवल रबी फसलों की उपज बढ़ाई जा सकती है, बल्कि आने वाले मौसम की फसलों की नींव भी मजबूत की जा सकती है।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउन्डर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एव कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

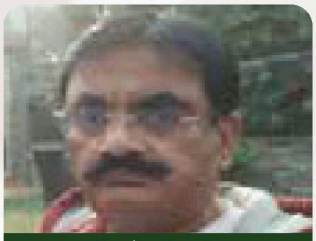

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एव प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

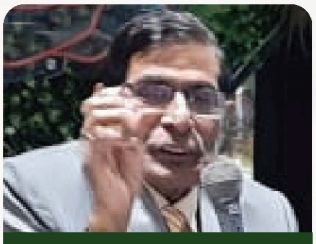

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइटिस्ट, IARI, पूसा

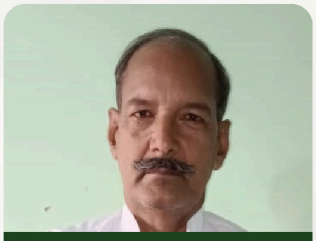

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

बसंत कालीन गन्ने की टॉप 3 किस्में: कम लागत में 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक दे सकती हैं जबरदस्त उपज

600 क्विंटल तक उपज देने वाली गन्ने की 3 बेहतरीन किस्में

आज के समय में देश के किसान ऐसी फसलों की तलाश में रहते हैं, जिनसे कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा सके। इसी क्रम में गन्ने की खेती किसानों के लिए एक भरोसेमंद और लाभकारी विकल्प बनकर उभरती है। गन्ने की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है, क्योंकि इससे चीनी, गुड़, शक्कर, एथेनॉल जैसे कई महत्वपूर्ण उत्पाद तैयार किए जाते हैं। यही कारण है कि बाजार में गन्ने का भाव अपेक्षाकृत स्थिर रहता है। यदि किसान बसंत काल में उन्नत किस्मों का चयन कर गन्ने की बुवाई करते हैं, तो वे 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की बंपर उपज प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से COJ 94141, COJ 86600 और COJ 862081 जैसी किस्में बसंत कालीन खेती के लिए बेहद उपयुक्त मानी जाती हैं।

1. COJ 94141 गन्ना किस्म – रोग प्रतिरोधक और भरोसेमंद उत्पादन

COJ 94141 गन्ने की किस्म किसानों के लिए लाभ का सौदा साबित हो सकती है। इस किस्म की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह लाल सड़न जैसी खतरनाक बीमारी के प्रति काफी हद तक प्रतिरोधी होती है, जिससे फसल सुरक्षित रहती है और उत्पादन पर नकारात्मक असर नहीं पड़ता। यह किस्म अच्छी बढ़वार करती है और सामान्य देखभाल में भी प्रति एकड़ लगभग 300–320 क्विंटल तक उपज देने की क्षमता रखती है। इसके अलावा इस किस्म की पत्तियां आसानी से अलग हो जाती हैं, जिससे गन्ने की छिलाई और कटाई में किसानों को कम मेहनत करनी पड़ती है। यही कारण है कि यह किस्म छोटे और मध्यम किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है।

2. COJ 86600 – उत्तर भारत के लिए एक आदर्श किस्म

COJ 86600 गन्ने की किस्म विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और आसपास के क्षेत्रों के किसानों के लिए एक

बेहतरीन विकल्प मानी जाती है। यह किस्म मध्यम से देर से पकने वाली श्रेणी में आती है और अनुकूल परिस्थितियों में 400 से 600 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देने में सक्षम है। इस किस्म की मांग चीनी मिलों में अच्छी रहती है, जिससे किसानों को अपने उत्पाद का उचित मूल्य मिल जाता है। बेहतर रस मात्रा और संतुलित मिठास के कारण यह किस्म उद्योगों के लिए भी पसंदीदा है। सही समय पर बुवाई और देखभाल करने पर यह किस्म किसानों को स्थिर और भरोसेमंद आय प्रदान कर सकती है।

3. COJ 862081 – अधिक उपज देने वाली उन्नत किस्म

COJ 862081 गन्ने की किस्म को उच्च उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों में गिना जाता है। जिन किसानों का उद्देश्य अधिकतम उपज प्राप्त करना है, उनके लिए यह किस्म एक बेहतर विकल्प साबित हो सकती है। इस किस्म से 400 से 600 क्विंटल प्रति एकड़ तक उत्पादन संभव है, जो इसे अन्य किस्मों की तुलना में अधिक लाभकारी बनाता है। इसकी बढ़वार तेज होती है और यह विभिन्न मिट्टी एवं जलवायु परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करती है। COJ 94141 और COJ 86600 की तुलना में यह किस्म अधिक उत्पादन देने की क्षमता रखती है, इसलिए बड़े स्तर पर खेती करने वाले किसानों के लिए यह विशेष रूप से उपयोगी मानी जाती है।

बसंत कालीन गन्ने की खेती क्यों है अधिक फायदेमंद?

गन्ने की खेती वर्ष में मुख्य रूप से दो बार की जाती है – एक बार शरद काल में और दूसरी बार बसंत काल में। हालांकि, विशेषज्ञों के अनुसार बसंत काल को गन्ने की बुवाई के लिए सबसे उपयुक्त समय माना जाता है। इस मौसम में तापमान और नमी अंकुरण के लिए अनुकूल होते हैं, जिससे गन्ने की फसल अच्छी तरह विकसित होती है। मजबूत जड़ प्रणाली और बेहतर टिलरिंग के कारण फसल का विकास संतुलित रहता है औ र अंततः उत्पादन में वृद्धि होती है। यही वजह है कि बसंत काल में बोया गया गन्ना किसानों को बेहतर उपज और मुनाफा दिलाने में मदद करता है।

सही देखभाल से होगी मजबूत कमाई

यदि किसान बसंत काल में इन उन्नत किस्मों की बुवाई करने के बाद समय पर सिंचाई, निराई-गुड़ाई और संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करते हैं, तो वे आसानी से 600 क्विंटल तक का उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही कीट एवं रोग नियंत्रण पर ध्यान देकर फसल को सुरक्षित रखा जा सकता है। बाजार में इन किस्मों की अच्छी मांग होने के कारण किसानों को बेहतर मूल्य भी मिल जाता है, जिससे उनकी वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। सही योजना और तकनीकी जानकारी के साथ गन्ने की खेती किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा सकती है।

गेहूँ की फसल में लगने वाले प्रमुख घातक रोग: लक्षण, नुकसान और वैज्ञानिक नियंत्रण

MASSEY FERGUSON

MASSEY FERGUSON
254 DYNASMART

गेहूँ की फसल में लगने वाले प्रमुख घातक रोग

रबी मौसम में गेहूँ भारत की सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। यह ठंडी जलवायु में अच्छी वृद्धि करती है और हल्के पाले को भी सहन कर लेती है। लेकिन अनुकूल मौसम के साथ-साथ गेहूँ की फसल कई गंभीर रोगों की चपेट में भी आ जाती है। यदि इन रोगों की समय पर पहचान और उचित प्रबंधन न किया जाए, तो उत्पादन और दाने की गुणवत्ता दोनों पर गहरा असर पड़ता है, जिससे किसानों को आर्थिक हानि होती है। इसलिए किसानों के लिए यह जरूरी है कि वे गेहूँ में लगने वाले प्रमुख रोगों, उनके लक्षणों और प्रभावी नियंत्रण उपायों की जानकारी रखें।

1. भूरा रतुआ: गेहूँ का सामान्य लेकिन हानिकारक रोग

भूरा रतुआ रोग Puccinia recondita tritici नामक फफूंद से फैलता है। यह रोग भारत के लगभग सभी गेहूँ उत्पादक क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका प्रारंभ प्रायः हिमालयी और नीलगिरी पहाड़ियों से होता है, जहाँ से यह हवा द्वारा मैदानी क्षेत्रों तक पहुँचता है।

पहचान:

इस रोग के लक्षण सबसे पहले पत्तियों पर दिखाई देते हैं। पत्तियों पर नारंगी-भूरे रंग के सुई की नोक जैसे छोटे धब्बे बनते हैं, जो धीरे-धीरे फैलकर पूरी पत्ती को ढक लेते हैं। बाद में ये धब्बे गहरे भूरे या काले रंग में बदल जाते हैं।

नुकसान:

भूरा रतुआ प्रकाश संश्लेषण को बाधित करता है, जिससे दाने का भराव ठीक से नहीं हो पाता और उपज में उल्लेखनीय कमी आ जाती है।

2. पीला रतुआ: ठंडे मौसम में तेजी से फैलने वाला रोग

पीला रतुआ या स्ट्राइप रस्ट Puccinia striiformis नामक कवक के कारण होता है। यह रोग ठंडे और नमी वाले वातावरण में तेजी से फैलता है और उत्तर भारत में विशेष रूप से नुकसानदायक माना जाता है।

पहचान:

पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीले रंग की लंबी धारियाँ दिखाई देती हैं, जो पत्ती की नसों के समानांतर होती हैं। समय के साथ ये धारियाँ पूरी पत्ती को पीला कर देती हैं और पीले रंग का पाउडर खेत में गिरने लगता है।

नुकसान:

यदि यह रोग कल्ले निकलने से पहले या उसी समय आ जाए, तो बालियों का बनना रुक सकता है और उपज लगभग नष्ट हो सकती है। तापमान बढ़ने पर रोग का असर कम हो जाता है और पीली धारियाँ काले रंग में बदल जाती हैं।

3. काला या तना रतुआ: फसल को गिराने वाला रोग

काला रतुआ, जिसे तना रतुआ भी कहा जाता है, Puccinia graminis tritici नामक फफूंद से होता है। यह रोग अधिकतर दक्षिण और मध्य भारत में पाया जाता है, जबकि उत्तर भारत में यह आमतौर पर फसल पकने की अवस्था में दिखाई देता है।

पहचान:

पत्तियों और तनों पर गहरे भूरे या काले रंग के उभरे हुए धब्बे दिखाई देते हैं। ये धब्बे पौधे की मजबूती को कमजोर कर देते हैं।

नुकसान:

इस रोग के कारण पौधे गिरने लगते हैं, जिससे कटाई में कठिनाई होती है और उपज घट जाती है। पुरानी

किस्मों जैसे लोक-1 में इसका प्रकोप अधिक देखा जाता है।

रतुआ रोगों का समेकित प्रबंधन

तीनों रतुआ रोगों से बचाव के लिए रोकथाम सबसे प्रभावी उपाय है। बुवाई के समय रोग-प्रतिरोधी और उन्नत किस्मों का चयन करें।

- बीज को थाइरम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- रोग के शुरुआती लक्षण दिखते ही प्रोपिकोनाजोल 25 ई.सी. का 0.1% घोल बनाकर छिड़काव करें।
- यह उपाय रोग के फैलाव को नियंत्रित करने में सहायक होता है।

4. करनाल बंट: गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला रोग

करनाल बंट गेहूँ का एक गंभीर रोग है, जिसकी पहचान सबसे पहले 1931 में हरियाणा के करनाल जिले में हुई थी। यह रोग Tilletia indica नामक कवक के कारण होता है, जो मिट्टी में लंबे समय तक जीवित रह सकता है।

प्रभावित क्षेत्र:

यह रोग ठंडे और नम क्षेत्रों जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड के मैदानी भाग, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और उत्तरी राजस्थान में अधिक पाया जाता है। गर्म जलवायु वाले राज्यों में इसका प्रकोप कम होता है।

नुकसान:

इस रोग में दानों के अंदर काला चूर्ण भर जाता है, जिससे दाने की गुणवत्ता, अंकुरण क्षमता और बाजार मूल्य घट जाता है। इसके कारण गेहूँ के निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

करनाल बंट से बचाव के उपाय

- बुवाई से पहले बीज को थाइरम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।
- दाना बनने की अवस्था में प्रोपिकोनाजोल 25 ई.सी. का 0.1% घोल छिड़कें।

यदि गेहूँ की फसल में इन रोगों का समय पर प्रबंधन न किया जाए, तो उपज और गुणवत्ता दोनों को भारी नुकसान हो सकता है। नियमित फसल निरीक्षण, शुरुआती लक्षणों की पहचान और वैज्ञानिक तरीके से उपचार अपनाकर किसान अपनी गेहूँ की फसल को इन घातक रोगों से सुरक्षित रख सकते हैं।

टपिओका फसल की खेती: भूमि की तैयारी, किस्में और उपज की जानकारी

टपिओका एक उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण स्टार्च युक्त जड़ वाली फसल है और इसे मुख्य रूप से दक्षिणी प्रायद्वीपीय भारत में उगाया जाता है।इसे सत्रहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा लाया गया था और इस फसल ने केरल में निम्न आय वर्ग के लोगों के बीच खाद्य संकट को दूर करने

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी भूमिगत कंद स्टार्च से भरपूर होती है और मुख्य रूप से पकाने के बाद खाई जाती है। टपिओका से बने प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे चिप्स, सागो और वर्मिसेली देश में भी लोकप्रिय हैं।
यह आसानी से पचने योग्य होने के कारण मुर्गी और पशुआहार का एक महत्वपूर्ण घटक बनता है। इसे औद्योगिक अल्कोहल, स्टार्च और ग्लूकोज के उत्पादन के लिए भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

भूमि की तैयारी

भूमि को 20-25 से.मी. की गहराई तक अच्छी तरह से खोदा या जोता जाता है। मिट्टी की बनावट और भूमि की ढलान के अनुसार टीले, क्यारियां या ऊँचे बिस्तर तैयार किए जाते हैं। खराब जल निकासी वाली मिट्टी में 25-30 से.मी. ऊँचाई के टीले बनाए जाते हैं। ढलानदार भूमि में वर्षा आधारित फसल के लिए और समतल भूमि में सिंचित फसल के लिए 25-30 से.मी. लंबी क्यारियां बनाई जाती हैं। ढलान के विपरीत दिशा में क्यारियां तैयार की जाती हैं। समतल और अच्छी जल निकासी वाली भूमि में समतल ऊँचे बिस्तर बनाए जाते हैं। चूँकि कसावा मोज़ेक रोग एक गंभीर समस्या है, इसलिए सेट्स की तैयारी के लिए रोगरहित डंडियों का चयन करने में सावधानी बरतनी चाहिए। रोगग्रस्त पौधों को हटाकर और 3 सप्ताह की उम्र के रोगरहित पौधों को लगाकर, प्रारंभिक चरण में ऊँचे बिस्तरों पर सेट्स को उगाने से रोगरहित पौधे सुनिश्चित होते हैं।

रोपाई

25-30 से.मी. लंबाई के सेट्स को बेड, टीले या क्यारियों में 5 से.मी. की गहराई पर सीधा लगाया जाता है। सेट्स को उल्टा लगाने से बचने के लिए सावधानी बरती जाती है।
दूरी किस्मों की शाखाप्रक्रिया पर निर्भर करती है। आमतौर पर सीधे और बिना शाखाओं वाली किस्मों को 75 x 75 से.मी. की दूरी पर लगाया जाता है और शाखित या अर्धशाखित किस्मों को 90 x 90 से.मी. की दूरी पर।
यदि रोपाई के बाद सेट्स सूख जाते हैं तो जल्द से जल्द लंबे आकार के सेट्स से प्रतिस्थापित किया जाता है। रोपाई के समय, 5% डंडियों को खेत में रिजर्व के रूप में 4 x 4 से.मी. की निकट दूरी पर लगाया जाता है।

कसावा की किस्में

कसावा की किस्में उनकी छाल और गूदे के रंग, कंदों के आकार, तने, पत्ते और डंठल के रंग, शाखाप्रक्रिया, फसल की अवधि और मोज़ेक रोग के प्रतिरोध के आधार पर भिन्न होती हैं।
उच्च स्तर के परागण से इसके विषम गुण विकसित होते हैं। वनस्पति विधि से प्रचार के कारण कई बहुगुणित किस्में और संकर विकसित हुई हैं।
कसावा पर अधिकांश फसल सुधार कार्य केंद्रीय कंद फसल अनुसंधान संस्थान (CTCRI), तिरुवनंतपुरम में किए गए हैं। नीचे CTCRI द्वारा विकसित प्रमुख किस्में दी गई हैं:

1. श्री हर्षा (Sree Harsha)

- **गुण:** यह एक ट्रिप्लॉयड क्लोन है, जिसे 'श्री सह्य' के डिप्लॉयड और प्रेरित टेट्राप्लॉयड क्लोन के संकरण से विकसित किया गया है।
- **पौधों का स्वरूप:** मोटा, सीधा और बिना शाखाओं वाला।
- **कंदों की विशेषताएँ:** अच्छे पकाने की गुणवत्ता और उच्च स्टार्च सामग्री (3841%)।
- **उपज:** 10 महीनों में 35-40 टन/हेक्टेयर।

2. श्री जया (Sree Jaya)

- **गुण:** यह एक अल्पावधि (6 महीने) क्लोनल चयन है, जो धानआधारित अंत:फसल प्रणाली में निम्न भूमि की खेती के लिए उपयुक्त है।
- **कंदों की विशेषताएँ:** भूरे रंग की त्वचा और बैंगनी छाल, अच्छी पकाने की गुणवत्ता।
- **उपज:** 26-30 टन/हेक्टेयर।
- **रोग संवेदनशीलता:** कसावा मोज़ेक रोग (CMD) के प्रति संवेदनशील।

3. श्री विजय (Sree Vijaya)

- गुण: यह भी एक अल्पावधि (6-7 महीने) क्लोनल चयन है, जो धानआधारित अंत:फसल प्रणाली में निम्न भूमि की खेती के लिए उपयुक्त है।
- कंदों की विशेषताएँ: हल्के पीले गूदे और क्रीम रंग की छाल के साथ, जो उच्च कैरोटीन सामग्री के कारण है।
- उपज: 7 महीनों में 25-28 टन/हेक्टेयर।
- कीट संवेदनशीलता: माइट और स्केल कीटों के प्रति संवेदनशील।

कसावा की खाद और पानी प्रबंधन

खाद प्रबंधन (Manure Management)

कसावा एक भारी पोषक तत्व लेने वाली फसल है, और अधिक उपज प्राप्त करने के लिए इसे उचित मात्रा में खाद दी जानी चाहिए।

मूल खाद: 125 टन/हेक्टेयर गोबर खाद भूमि तैयारी के समय डालें।

उच्च उपज वाली किस्मों के लिए उर्वरक मात्रा:

- 50 किलोग्राम नाइट्रोजन (N)
- 50 किलोग्राम फॉस्फोरस (P_2O_5)
- 50 किलोग्राम पोटाश (K_2O) प्रति हेक्टेयर।

यदि सेट्स की रोपाई गर्म मौसम में की जाती है, तो खाद और उर्वरक का मूल डोज एक महीने बाद डालें। इससे दीमक के हमले और सेट्स के सूखने की संभावना कम हो जाती है।

दूसरा डोज: 45-50 दिनों बाद 50 किलोग्राम नाइट्रोजन और 50 किलोग्राम पोटाश के साथ खरपतवार हटाने और मिट्टी चढ़ाने का काम करें।

अल्पावधि किस्मों के लिए उर्वरक मात्रा: इसे 75:50:75 किलोग्राम NPK/हेक्टेयर तक घटाया जा सकता है।

पानी प्रबंधन (Water Management):

- **केरल में:** कसावा मुख्य रूप से वर्षा आधारित फसल के रूप में उगाई जाती है।
- **तमिलनाडु में**: इसे सिंचित फसल के रूप में उगाया जाता है।
- उपलब्ध नमी के 25% तक की कमी पर फसल को सिंचाई देने से कंदों की उपज दोगुनी हो सकती है।

खरपतवार प्रबंधन (Weed Management)

खरपतवार प्रबंधन का उद्देश्य फसल के प्रारंभिक चरणों में खरपतवार को हटाना और सेट्स की भौतिक स्थिति को सुधारना है, ताकि कंदों का विकास ठीक से हो सके।

- पहला खरपतवार प्रबंधन: रोपाई के 45-60 दिनों बाद, गहराई से करें।
- दूसरा खरपतवार प्रबंधन: पहले प्रबंधन के एक महीने बाद, हल्की गुड़ाई या मिट्टी चढ़ाने के साथ खरपतवार हटाएं।

कसावा की कटाई और उपज

कटाई (Harvesting)

फसल की अवधि:

- **लंबी अवधि की किस्में:** रोपाई के 10-11 महीने बाद फसल कटाई के लिए तैयार होती है।
- **अल्पावधि किस्में:** 6-7 महीने में कटाई की जा सकती है।

समय पर कटाई का महत्व:

कटाई में देरी से कंदों की गुणवत्ता खराब हो जाती है।

कटाई की विधि:

पौधों को धीरेधीरे उखाड़कर कटाई की जाती है, इसके लिए तनों को पकड़कर खींचा जाता है।

डंठल का भंडारण:

कटाई के बाद डंठलों को अगली रोपाई के लिए अच्छी तरह हवादार स्थान पर सीधा खड़ा करके संग्रहित करें।

उपज (Yield)

- **अल्पावधि किस्में:** 25-30 टन/हेक्टेयर।
- **अन्य किस्में:** 30-40 टन/हेक्टेयर।

जरबेरा फूल की खेती - जलवायु, मिट्टी, फसल उत्पादन से जुडी सम्पूर्ण जानकारी

जरबेरा बहुवर्षीय कर्तित पुष्प वर्ग का पौधा है। जरबेरा एक खूबसूरत और आकर्षक फूल है, इसकी उत्पत्ति स्थल अफ्रीका को माना जाता है। इसकी खेती अलंकृत बागवानी में सजावट एवं गुलदस्ता बनाने के लिए की जाती है। छोटी किस्म की प्रजातियों को गमलों में शोभाकारी किनारी के रूप में भी उगाया जाता है। इसके कर्तित पुष्प लगभग एक सप्ताह तक तरोताज़ा बने रहते हैं। इसकी लगभग 70 प्रजातियाँ हैं जिसमें 7 का उत्पत्ति स्थल भारत या आस पास का माना गया है। इस लेख में हम आपको जरबेरा फूल की खेती से जुड़ी विस्तृत जानकारी देंगे।

जरबेरा की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी

जलवायु

जरबेरा की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु सबसे अच्छी है। इसे 18-24°C का तापमान चाहिए। जरबेरा को ठंड और उच्च तापमान दोनों हानिकारक हैं।

सूर्य से प्रत्यक्ष प्रकाश की जरूरत है, लेकिन अत्यधिक गर्मी से बचाने के लिए हल्की छाया भी प्राप्त की जा सकती है। जरबेरा की खेती हवादार जगहों पर की जानी चाहिए ताकि पौधों को उचित वायु संचालन मिल सके।

जरबेरा के लिए मिट्टी

जरबेरा में बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। मिट्टी का pH 5.5 से 6.5 तक होना चाहिए। इसके लिए जमीन को अच्छी तरह से जोता जाता है और जैविक खाद, जैसे वर्मी कम्पोस्ट या गोबर की खाद, उसमें मिलाया जाता है।

मिट्टी की अच्छी नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई और जल निकासी का उचित नियंत्रण भी आवश्यक है। खेत की अंतिम जुताई करने के बाद पाटा लगाकर जमीन को समतल करना चाहिए।

जरबेरा प्रवर्धन की विधि

जरबेरा दोनों बीज और वानस्पतिक भागों से उगाया जाता है। बीज नवजातियों को जन्म देता है। वानस्पतिक प्रवर्धन से पौधे पुराने पौधों की तरह उत्पादित होते हैं। कलम्प विभाजन इस प्रक्रिया से जरबेरा को बढ़ावा देता है।

कलम्प विभाजन प्रक्रिया से बड़े पैमाने पर पौधों को कम समय में नहीं बनाया जा सकता है। रोगमुक्त

पौधा उत्तक संवर्धन विधि से बनाया जाता है।

जरबेरा की रोपाई के लिए भूमि की तैयारी और रोपाई

बालू क्यारी बनाने से पहले, जीवांश पदार्थ (पत्तियों की सड़ी खाद या गोबर की खाद) को अधिक मात्रा में मिलाकर मिलाया जाता है। क्यारी बनाने से पहले मिट्टी की 30 से 40 सेंमी. गहरी खुदाई करके भुरभुरा और खरपतवार को बाहर निकाल दें।

पौध रोपण से 15 से 20 दिन पहले, मृदा परीक्षण के परिणामों के आधार पर आवश्यक रासायनिक उर्वरक और जीवांश मिट्टी में 15 से 20 सेंमी. गहराई तक अच्छी तरह मिला देते हैं।

मिट्टी को सक्रांमक रूप से शुद्ध करने के लिए फार्मेल्डिहाइड की 2.0 प्रतिशत सान्द्रता का घोल बनाकर ड्रेसिंग करके दो से तीन दिनों के लिए पॉलीथीन से मिट्टी को ढक दें। पॉलीथीन को मिट्टी की सतह से निकालने के बाद छह से सात दिनों तक मिट्टी को खुला छोड़ दें।

वातावरण अनुकूल होने पर जरबेरा का पौध पूरे वर्ष रोपण किया जा सकता है। यह जून से सितंबर और फरवरी से मार्च तक लगाया जाता है। पंक्ति और पौध का फासला 33 या 40 सेंमी होना चाहिए।

जरबेरा पौधों को लगातार पोषक तत्व देना चाहिए, लेकिन उसे कभी भी बहुत सारे पोषक तत्व नहीं देना चाहिए। पौध रोपण चार

जरबेरा की खेती में उर्वरक प्रबंधन

तब तक उर्वरक देना नहीं शुरू करते जब तक पौधों में नई वृद्धि नहीं हो जाती। नत्रजन, फास्फोरस और पोटाश के लिए घुलनशील ग्रेडेड विभिन्न प्रतिशत वाले रासायनिक उर्वरक का उपयोग किया जाता है, जैसे 13:13:13, 19:19:19 और 0:0:51, नाइट्रोजन में कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट भी शामिल है।

ज़रुरत पड़ने पर पौधों पर सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव किया जाता है। वर्तमान में पौधों की वृद्धि एवं विकास पर इन सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा काफी प्रभावी है। तक निर्भर है।

जरबेरा की खेती में फूल की तुड़ाई

गुणवत्तापूर्ण पुष्प उत्पादन पौध रोपण के पांच से छह महीने बाद होता है। जर्बेरा फूल जब पूरी तरह से खिलते ही उन पुष्पों को उसी दिन काट देना चाहिए। फूलों को सही समय से पहले काटने से उनका रंग और आकार खराब हो जाएगा। कटाई सुबह के समय की जानी चाहिए ताकि फूल ताजगी बनाए रखें। कटाई के बाद फूलों को साफ पानी में रखा जाता है ताकि वे अधिक समय तक ताजगी बनाए रखें।

एक एकड़ क्षेत्र से 1-1.5 लाख फूल प्रति वर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं, जो किसानों के लिए अच्छा लाभ प्रदान करते हैं।

लीची की खेती कैसे करें: लीची की किस्में और खेती का सही तरीका

Litchi Cultivation: लीची की उन्नत खेती की विधि

लीची एक स्वादिष्ट और रसीला फल होता है, जिसकी गुणवत्ता उत्कृष्ट होती है। लीची का वैज्ञानिक नाम लीची चिनेंसिस है, वनस्पति रूप से यह सैपिंडेसी (Sapindaceae) परिवार से संबंधित है। लीची की फसल भारत में कई स्थानों पर उगाई जाती

है। लीची की खेती के लिए विशेष जलवायु परिस्थितियों की आवश्यकता होती है, लेकिन यह पौधा मिट्टी को लेकर बहुत अधिक चयनशील नहीं होता। यह पौधा वायरल रोगों से भी बहुत कम प्रभावित होता है। इस लेख में हम आपको लीची की उन्नत खेती की विधि (Litchi Cultivation)के बारे में जानकारी देंगे।

लीची की फसल के लिए जलवायु की आवश्यकता (Climate Requirement for litchi Cultivation)

लीची उत्पादन के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। फूल आने के लिए इसे एक ठंडी और शुष्क ऋतु से उत्पन्न शाकीय अवधि चाहिए। कुछ आर्द्र क्षेत्रों में तापमान और सापेक्षिक आर्द्रता में हल्की गिरावट फूल आने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित कर सकती है। फूलों की बालियों के दिखाई देने से लेकर फसल की कटाई तक नमी की अच्छी उपलब्धता अनिवार्य होती है। लीची ठंड के मौसम में पाला और गर्मी के मौसम में शुष्क गर्मी सहन नहीं कर सकती।

लीची की फसल के लिए मिट्टी की आवश्यकता (Soil Requirement)

लीची की फसल गहरी, अच्छी जल निकासी वाली, जैविक पदार्थों से भरपूर दोमट मिट्टी में अच्छी तरह विकसित होती है, जिसकी pH सीमा 5.0 से 7.0 के बीच होती है। लीची थोड़े समय तक के लिए जल भराव को शान कर सकती है। लेकिन लंबे समय तक जलमग्न रहना हानिकारक होता है। जल निकासी का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि लीची प्रायः अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों और निचले इलाकों में उगाई जाती है, जहाँ पौधों को हवा से बचाया जाता है।

लीची की किस्में (Varieties of litchi)

लीची की खेती से मुनाफा कमाने के लिए उन्नत किस्मों का चुनाव बहुत आवश्यक है। लीची की किस्में निम्नलिखित दी गयी है -

1. क्वाई मी (मॉरीशस, ताई सो)

- इस किस्म के फल मध्यम आकार (22 से 25 ग्राम) के होते हैं और 12 से 30 के गुच्छों में चमकीले लाल रंग के दिखाई देते हैं।
- फलों की गुणवत्ता अच्छी होती है। यह हिंद महासागर क्षेत्र में सबसे व्यापक रूप से पाई जाने वाली किस्म है। पेड़ मध्यम वृद्धि वाले और पतले आकार के होते हैं।

2. रोज़ सेंटेड

- लीची की इस किस्म के फल मध्यम आकार (16 ग्राम) के होते हैं, गोलाकार और दिल के आकार के दिखाई देते हैं।
- गूदा बहुत मीठा होता है और उसमें गुलाब की सुगंध पाई जाती है, इसी वजह से इसका नाम पड़ा है। यह किस्म मुख्य रूप से भारत के उत्तरांचल में उगाई जाती है।

3. शाही (मुजफ्फरपुर)

- शाही लीची की किस्म के फल मध्यम आकार (20 से 25 ग्राम) के होते हैं और चमकीले गुलाबी रंग के और गुच्छों में पाए जाते हैं। गूदा मीठा होता है।
- यह बिहार राज्य में सबसे आम किस्म है। इसकी निर्यात गुणवत्ता बहुत अच्छी होती है, लेकिन इसमें फटने और धूप से झुलसने की समस्या देखने को मिलती है।
- इस किस्म के पौधे तेज़ी से बढ़ते हैं और नियमित उत्पादन देते हैं (प्रति पौधे 80 से 100 किलोग्राम)।

4. चक्रपद

- यह किस्म बड़े आकार का दिल के आकार का फल देती है (लगभग 32 ग्राम)।
- इसकी त्वचा पतली और लचीली होती है, रंग गहरा लाल होता है जिसमें पीले धब्बे पाए जाते हैं।
- गूदा मध्यम रूप से रसदार होता है और उसमें हल्की खटास बनी रह सकती है।

- इसमें गुठली अपेक्षाकृत बड़ी होती है। पेड़ औसत वृद्धि वाले होते हैं, सीधी बढ़वार के साथ लंबी शाखाएँ और घना पर्णसमूह (पत्तियाँ) पाए जाते हैं।

लीची की उन्नत खेती की विधि (Advanced cultivation method of litchi)

लीची की खेती से लाभ प्राप्त करने के लिए सबसे पहले भूमि की तैयारी की जाती है। यदि खेती का काम मशीनीकरण से किया जा सकता है, तो गहरी जुताई के बाद हल चलाया जाता है, संभवतः गोबर की खाद और फॉस्फेट तथा पोटाश उर्वरक (मृदा परीक्षण के परिणामों के आधार पर) डालने के बाद। जब पौधों को गड्ढों में लगाया जाता है, तो इस चरण पर आवश्यक तत्व (NPK) डाले जाते हैं।

लीची की खेती के लिए पौधे कैसे तैयार करे? (How to prepare plants for litchi cultivation?)

- लीची उत्पादन के लिए पौधों की तैयार सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, लीची के प्रसार के लिए वायु स्तरीकरण (एयर लेयरिंग) सबसे अधिक प्रचलित तरीका है।
- इसके लिए एक साल पुरानी, स्वस्थ और मजबूत शाखाओं का चयन किया जाता है। चुनी हुई टहनी पर कली के नीचे करीब 2 सेमी चौड़ी छाल उतार दी जाती है। इस घाव वाले हिस्से पर IBA या रूटोन लगाने से जड़ों का विकास तेज और बेहतर होता है।
- इसके बाद उस हिस्से को 2 भाग गीली काई और 1 भाग पुराने लीची वृक्ष के तने के पास की मिट्टी के मिश्रण से बने गोले में लपेटकर पॉलीथीन शीट से अच्छी तरह बांध दिया जाता है, ताकि नमी और वायुरोधक स्थिति बनी रहे।
- करीब 2 महीने में पर्याप्त जड़ें बनने के बाद उस शाखा को नीचे से काटकर नर्सरी में रोपित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया जुलाई से अक्टूबर तक सबसे उपयुक्त रहती है। लगभग 6 महीने तक नर्सरी में पाले गए वायु स्तरीकृत पौधों को मानसून के समय स्थायी खेत में लगाया जाता है।

लीची कैसे उगाएं (How to Grow litchi)

- जब नर्सरी में पौधे लगभग 6 महीने के हो जाते हैं, तब उन्हें खेत में रोपित किया जाता है। इसके लिए 8–10 मीटर की दूरी पर वर्ग पद्धति में 90 × 90 × 90 सेंटीमीटर आकार के गड्ढे तैयार किए जाते हैं।
- इन गड्ढों को भरने के लिए ऊपर की सतही मिट्टी में लगभग 40 किलोग्राम अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद, 2 किलोग्राम नीम या करंज खली, 1 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 200–300 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाया जाता है।
- पुराने लीची वृक्षों की जड़ों के पास की लगभग 2 टोकरियाँ मिट्टी मिलाने से माइकोराइजा का विकास बेहतर होता है, जिससे पौधों की बढ़वार और मजबूती में सहायता मिलती है।

लीची की खेती में प्रशिक्षण और छंटाई (Training and pruning in litchi cultivation)

- पौधों के शुरुआती विकास चरण में उन्हें उचित ढांचा देने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक होता है। इसमें अवांछित शाखाओं को हटाकर वृक्ष को संतुलित आकार दिया जाता है, जिससे तना और छत्रक (कैनोपी) बेहतर रूप से विकसित हो सके। उपयुक्त ढांचे के लिए पौधे की 60–75 सेमी ऊँचाई पर विपरीत दिशा में 3–4 शाखाएँ रखी जाती हैं।
- भीड़भाड़ वाली, आपस में रगड़ने वाली या संकरी कोण वाली शाखाओं को हटा दिया जाता है, क्योंकि संकरी कोण वाली शाखाएँ आसानी से टूट सकती हैं। परिपक्व वृक्षों की गैर-फलित

लगे हटके
करे हटके

बोल्ड एंड ब्लैक

DIGITRAC
PP43i

37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

- और अनुपयोगी शाखाएँ, सूखी, रोगग्रस्त और एक-दूसरे को काटती हुई शाखाएँ भी समय-समय पर छाँट दी जानी चाहिए। कटाई के बाद हल्की छंटाई करने से वृक्ष का विकास बेहतर होता है, फलन को बढ़ावा मिलता है और उपज में सुधार होता है।
- फसल की तुड़ाई के दौरान फलों को 8–10 सेमी लंबी टहनी सहित तोड़ना चाहिए। ऐसा करने से पौधे में नई वृद्धि को प्रोत्साहन मिलता है और अगले वर्ष अधिक उत्पादन मिलता है।

लीची की कटाई, तुड़ाई और उपज (Litchi Harvesting, Picking and Yield)

- लीची के फल गुच्छों सहित तोड़े जाते हैं, जिनमें टहनी का कुछ हिस्सा और पत्तियाँ भी शामिल रहती हैं। कटाई के समय केवल पूरी तरह परिपक्व गुच्छों को तोड़ा जाता है। फलों की परिपक्वता का निर्धारण मुख्य रूप से उनके रंग और गूदे के स्वाद से किया जाता है।
- कटाई का समय प्रातःकाल (सुबह) का उपयुक्त माना जाता है, जब तापमान और आर्द्रता फल की भंडारण क्षमता (शेल्फ-लाइफ) को बनाए रखने में सहायक होते हैं। कटाई के दौरान फलों को सावधानीपूर्वक इकट्ठा किया जाता है, ताकि वे जमीन पर न गिरें। बड़े पैमाने पर कटाई के लिए यांत्रिक उपकरणों का भी प्रयोग किया जा सकता है।
- आमतौर पर लीची की फसल मई-जून के बीच पकती है, हालांकि किस्म और क्षेत्र के अनुसार समय थोड़ा बदल सकता है। फसल उत्पादन पर पेड़ की आयु, कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ और बाग की देखभाल का सीधा असर पड़ता है। सामान्यत: 14–16 वर्ष पुराने वृक्षों से 80–150 किलोग्राम फल प्रति पेड़ प्राप्त किए जाते हैं।

ब्लूबेरी की खेती से कमाई – 3000 पौधों से सालाना 60 लाख रुपए तक मुनाफा

भारत में अब किसान परंपरागत खेती के साथ-साथ अमेरिकन ब्लूबेरी (Blueberry Farming) जैसी हाई-वैल्यू फसलों की ओर भी बढ़ रहे हैं। ब्लूबेरी एक ऐसा फल है जिसे दुनिया भर में सुपरफूड कहा जाता है। इसकी मांग लगातार बढ़ रही है, खासकर हेल्थ-कॉन्शियस और फिटनेस पसंद लोगों के बीच। महाराष्ट्र के महाबलेश्वर के पंचगनी इलाके में एक किसान ने ग्रीनहाउस में ब्लूबेरी की खेती शुरू की। उन्होंने बताया कि ब्लूबेरी उगाना उतना मुश्किल नहीं है जितना लोग समझते हैं। पौधे लगाने के बाद यह 10 साल तक फल देता है और प्रति पौधा औसतन 2–5 किलो तक उत्पादन मिलता है।

क्यों ब्लूबेरी को सुपरफूड कहते हैं?

ब्लूबेरी एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन और मिनरल से भरपूर होती है। यह हार्ट हेल्थ, मेमोरी पॉवर, डायबिटीज कंट्रोल और इम्यून सिस्टम के लिए

फायदेमंद मानी जाती है। इसी कारण भारत में इसकी मांग तेजी से बढ़ रही है और यह आयात पर निर्भर फल है।

खेती की तकनीक और जलवायु

- जलवायु: भारत में 42 डिग्री तक तापमान पर भी इसकी खेती संभव है।
- रोपण का समय: अप्रैल–मई सबसे उपयुक्त समय है।
- फल आने का समय: पौधा लगाने के बाद लगभग 10 महीने में फल आना शुरू होता है और फरवरी–जून तक फसल ली जा सकती है।
- सिंचाई: ड्रिप इरिगेशन सबसे अच्छा रहता है क्योंकि पौधों को नमी लगातार चाहिए।
- छंटाई: बारिश के मौसम में पौधे की छंटाई करना जरूरी है ताकि अगले साल बेहतर उपज मिल सके।

उत्पादन और मुनाफा

एक एकड़ में करीब 3000 पौधे लगाए जा सकते हैं। चौथे साल तक प्रति पौधा लगभग 2 किलो उपज मिलती है। यानी कुल उत्पादन 6000 किलो होता है। यदि बाजार भाव ₹1000 प्रति किलो रहा तो सालाना कमाई करीब ₹60 लाख रुपए तक हो सकती है। पाँचवें साल से उपज और बढ़कर प्रति पौधा 5 किलो तक पहुँच सकती है।

लागत और निवेश

- पौधे की कीमत: बाहर से मंगाए गए पौधे की कीमत लगभग ₹800 प्रति पौधा पड़ती है।
- ग्रीनहाउस और ड्रिप सिस्टम: शुरुआती निवेश अधिक है लेकिन लंबे समय तक फायदा देता है।
- एक बार पौधा लगाने पर 10 साल तक लगातार उत्पादन मिलता है, जिससे हर साल कमाई बढ़ती जाती है।

मार्केटिंग और भविष्य

ब्लूबेरी का बाजार प्रीमियम है। बड़े शहरों के मॉल, सुपरमार्केट, होटल, रेस्टोरेंट और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर इसकी भारी मांग है। किसान यदि सही सप्लाई चैन से जुड़ जाएं तो उन्हें एक्सपोर्ट का भी अवसर मिल सकता है।

कुल मिलाकर, ब्लूबेरी की खेती उन किसानों के लिए सुनहरा विकल्प है जो नई तकनीक अपनाकर कम क्षेत्र में ज्यादा मुनाफा कमाना चाहते हैं। उचित प्रबंधन, सिंचाई और मार्केटिंग के साथ यह खेती सालाना लाखों की आय सुनिश्चित कर सकती है।

बैंगन की फसल के प्रमुख रोग और उनके नियंत्रण के आसान उपाय

बैंगन का सब्जियों में प्रमुख स्थान है। यह हर तरह की पर्यावरणीय परिस्थितियों में और साल भर उगाई जाने वाली फसल है। आयुर्वेद के अनुसार यह यकृत समस्याओं को दूर करने में सहायक है। सफेद बैंगन मधुमेह के मरीजों के लिए लाभप्रद रहता है। इसमें विटामिन ए, बी व सी प्रचुर मात्रा में मिलते है। बैंगन की मांग अधिक रहने के कारण किसानों को इसका बाजार भाव ठीक मिल रहा है। बैंगन की खेती में

किसानो को कई समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है जिससे की उपज में काफी हद तक कमी आती है। इसमें सबसे प्रमुख है इसके रोग, इस लेख में हम आपको बैंगन के पौधे में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

बैंगन की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनके नियंत्रण

बैंगन की फसल को कई प्रकार के रोग प्रभावित करते है जिससे की उपज में काफी कमी आती है। बैंगन की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग और उनकी रोकथाम के उपाय निम्नलिखित दिए गए है:

1. बैक्टीरियल विल्ट (Pseudomonas solanacearum)

बैक्टीरियल विल्ट से प्रभावित पौधों पर पहले लक्षण पत्तियों की सतह पर दिखाई देते हैं। पौधे का मुरझाना, बौनापन, पत्तियों का पीला पड़ना और अंत में पूरे पौधे का गिरना रोग के विशिष्ट लक्षण हैं। मुरझाने से पहले निचली पत्तियाँ पहले झुक सकती हैं। प्रभावित भागों से जीवाणु रिसाव निकलता है। दोपहर के समय पौधे में मुरझाने के लक्षण दिखते हैं, रात में ठीक हो जाते हैं, लेकिन इस रोग से संक्रमित पौधे जल्दी ही मर जाते हैं।

बैक्टीरियल विल्ट रोग के नियंत्रण उपाय

- रोग से बचने के लिए प्रतिरोधी किस्म का उपयोग करें।
- फूलगोभी जैसी क्रूसिफेरस सब्जियों के साथ फसल चक्रण रोग की घटनाओं को कम करने में मदद करता है।
- खेतों को साफ रखना चाहिए और प्रभावित भागों को इकट्ठा करके जला देना चाहिए।
- रोग को नियंत्रित करने के लिए कॉपर फफूंदनाशकों (2% बोर्डो मिश्रण) का छिड़काव करें। यह रोग रूट नॉट नेमाटोड की उपस्थिति में अधिक प्रचलित है, इसलिए इन नेमाटोड पर नियंत्रण रोग के प्रसार को रोक देगा।

2. अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग (Alternaria melongenae, A. solani)

इस रोग के प्रमुख लक्षण पत्ती पर हुए धब्बों में दरारें दिखना होता हैं। अल्टरनेरिया की दो प्रजातियाँ आम तौर पर पाई जाती हैं, जो संकेंद्रित छल्लों वाले विशिष्ट पत्ती के धब्बे बनाती हैं।

धब्बे ज़्यादातर अनियमित होते हैं, 4-8 मि.मी. व्यास के और पत्ती के ब्लेड के बड़े हिस्से को कवर करने के लिए मिल सकते हैं।

गंभीर रूप से प्रभावित पत्तियाँ गिर सकती हैं। अल्टरनेरिया मेलोंगेने फलों को भी संक्रमित करता है जिससे बड़े गहरे धब्बे बनते हैं। संक्रमित फल पीले हो जाते हैं और समय से पहले गिर जाते हैं।

अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण उपाय

- पंत सम्राट किस्म पत्ती धब्बा रोग के लिए प्रतिरोधी किस्म है, रोग प्रतिरोधक किस्मों को उगाकर नियंत्रित किया जा सकता है।
- 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या 2 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या 2.5 ग्राम ज़िनेब प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से पत्ती धब्बों पर प्रभावी नियंत्रण होता है।

3. तंबाकू मोज़ेक वायरस (TMV)

रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर मोज़ेक जैसा चित्तीदार दिखना और पौधों का बौना होना तंबाकू मोज़ेक वायरस के मुख्य लक्षण हैं। शुरूआती चरण में मोज़ेक लक्षण हल्के होते हैं, लेकिन बाद में ये गंभीर हो जाते हैं। संक्रमित पत्तियां विकृत, छोटी और चमड़े जैसी हो जाती हैं। संक्रमित पौधों पर बहुत कम फल लगते हैं। तंबाकू मोज़ेक वायरस का मुख्य लक्षण पत्तियों पर स्पष्ट चित्तीदारपन होता है। उन्नत

अवस्था में पत्तियां फफोले भी विकसित करती हैं। गंभीर रूप से संक्रमित पत्तियां छोटी और विकृत हो जाती हैं। जो पौधे प्रारंभिक अवस्था में संक्रमित होते हैं, वे बौने रह जाते हैं। PVY (पोटैटो वायरस Y) आसानी से सैप के माध्यम से फैलता है। खेत में यह वायरस एफिड्स जैसे अफिस गॉसिपी और मायजस पर्सिकी के माध्यम से फैलता है।

तंबाकू मोज़ेक वायरस रोग के नियंत्रण उपाय

- सभी खरपतवारों को नष्ट करें और बैंगन की नर्सरी और खेत के पास खीरा, मिर्च, तंबाकू, टमाटर न लगाएं।
- नर्सरी में काम करने से पहले साबुन और पानी से हाथ धोएं।
- बैंगन की पौध तैयार करते समय तंबाकू का सेवन (धूम्रपान या चबाना) करने से बचे।
- कीट वाहकों को नियंत्रित करने के लिए डाइमिथोएट (2 मि.ली./लीटर) या मेटासिस्टॉक्स (1 मि.ली./लीटर) पानी में मिलाकर स्प्रे करें।

4. फलों का सड़न (Phomopsis vexans)

यह रोग जमीन के ऊपर के सभी पौध भागों को प्रभावित करता है। धब्बे आमतौर पर सबसे पहले अंकुर के तनों या पत्तियों पर दिखाई देते हैं। ये धब्बे अंकुर के तनों को घेर लेते हैं और उन्हें नष्ट कर देते हैं। पत्तियों पर धब्बे स्पष्ट रूप से परिभाषित, गोल, लगभग 1 इंच व्यास के होते हैं और भूरे से ग्रे रंग के होते हैं, जिनके किनारे गहरे भूरे रंग के होते हैं। फलों पर धब्बे आकार में बड़े होते हैं। संक्रमित फल पहले नरम और पानीदार हो जाते हैं, लेकिन बाद में काले और सूखे (ममीकृत) हो सकते हैं। धब्बे का केंद्र ग्रे हो जाता है और उस पर काले पाईसीनिडिया (फंगल संरचना) विकसित होते हैं।

फलों का सड़न रोग के नियंत्रण उपाय

- बीजों को 50°C गर्म पानी में 30 मिनट तक डुबोना चाहिए।
- नर्सरी और खेत में 7-10 दिन के अंतराल पर डाइफोलेशन 0.2% या कैप्टन 0.2% का छिड़काव रोग को नियंत्रित करता है।
- गहरी गर्मी में जुताई, तीन साल का फसल चक्र और संक्रमित पौध अवशेषों का संग्रह व नष्ट करना अन्य नियंत्रण विधियां हैं।
- खेत में फसल पर जिनेब 0.2% या बोर्डो मिश्रण 0.8% का छिड़काव फोमोप्सिस ब्लाइट को नियंत्रित करने में प्रभावी है।

5. बैंगन का छोटा पत्ता रोग

जैसे की इस रोग के नाम से पता लग रहा है इस रोग से संक्रमित पत्तियों का आकार छोटा हो जाता है। डंठल (पेटीओल) इतने छोटे होते हैं कि पत्तियां तने से चिपकी हुई प्रतीत होती हैं। संक्रमित पत्तियां संकरी, मुलायम, चिकनी और पीले रंग की होती हैं। नई विकसित पत्तियां और भी छोटी होती हैं। तने के इंटरनोड्स भी छोटे हो जाते हैं। अक्सिलरी (बगल की) कलियां बड़ी हो जाती हैं, लेकिन उनकी डंठल और पत्तियां छोटी रह जाती हैं। इससे पौधे को झाड़ी जैसा रूप मिलता है। अधिकतर मामलों में फूल नहीं आते, लेकिन यदि फूल बनते हैं, तो वे हरे ही रहते हैं। इस रोग में फल लगना दुर्लभ होता है।

बैंगन का छोटा पत्ता रोग के नियंत्रण उपाय

प्रभावित पौधों को नष्ट करके रोग की गंभीरता को कम किया जा सकता है।

फसल की नई बुवाई तभी करें जब खेत और उसके आसपास के रोगग्रस्त पौधों को हटा दिया गया हो।

कीट वाहकों के नियंत्रण के लिए निम्नलिखित कीटनाशकों का छिड़काव करें:

- मिथाइलडेमेटॉन 25 ईसी: 2 मि.ली./लीटर
- डाइमिथोएट 30 ईसी: 2 मि.ली./लीटर
- मेलाथियॉन 50 ईसी: 2 मि.ली./लीटर

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी: 48 एचपी श्रेणी में एक दमदार ट्रैक्टर

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

महिंद्रा एंड महिंद्रा का सब डिवीजन स्वराज भारत का एक प्रतिष्ठित ट्रैक्टर ब्रांड है, जो किसानों को मजबूत, भरोसेमंद और किफायती कृषि समाधान प्रदान करता है। इसके ट्रैक्टर भारतीय मिट्टी, मौसम और खेती की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर डिजाइन किए जाते हैं, जिससे बेहतर परफॉर्मेंस और ईंधन दक्षता मिलती है। स्वराज ट्रैक्टर अपनी मजबूत बनावट, आसान मेंटेनेंस और लंबे समय तक टिकाऊपन के लिए जाने जाते हैं। देशभर में फैले सर्विस नेटवर्क के कारण यह ब्रांड किसानों के बीच बेहद भरोसेमंद माना जाता है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको कंपनी के स्वराज 744 fe 4WD ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत के बारे में जानेंगे।

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी के फीचर्स

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर के साथ मजबूत गियर बॉक्स दिया गया है, जो हर तरह के खेत कार्यों में बेहतर गति नियंत्रण और स्मूथ ऑपरेशन सुनिश्चित करता है। इसमें ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स लगाए गए हैं, जो अधिक सुरक्षा, बेहतर ब्रेकिंग परफॉर्मेंस और लंबे समय तक टिकाऊपन प्रदान करते हैं। ट्रैक्टर पर 6 वर्ष की वारंटी मिलती है, जिससे इसकी विश्वसनीयता और गुणवत्ता पर किसानों का भरोसा और मजबूत होता है। क्लच के विकल्प के रूप में सिंगल क्लच, ड्यूल क्लच और IPTO (ऑप्शनल) की सुविधा दी गई है, जो अलग-अलग कृषि कार्यों के अनुसार लचीलापन और बेहतर नियंत्रण प्रदान करती है। स्टीयरिंग सिस्टम में पावर स्टीयरिंग और मैकेनिकल स्टीयरिंग (ऑप्शनल) का विकल्प उपलब्ध है, जिससे ऑपरेटर को कम मेहनत में आसान और सटीक संचालन का अनुभव मिलता है। इसमें 4WD व्हील ड्राइव सिस्टम दिया गया है, जो कठिन और असमतल जमीन पर भी बेहतरीन ट्रैक्शन और स्थिरता प्रदान करता है। इंजन का रेटेड आरपीएम 2000 है, जो संतुलित पावर आउटपुट, बेहतर ईंधन दक्षता और लंबे समय तक लगातार काम करने की क्षमता सुनिश्चित करता है।

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी के स्पेसिफिकेशन

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी में एडवांस्ड तकनीक का उपयोग किया गया है, जो इसके परफॉर्मेंस और कंफर्ट दोनों को बेहतर बनाती है और इसे रोजमर्रा की खेती की जरूरतों को कुशलता व भरोसे के साथ पूरा करने में सक्षम बनाती है। इसमें 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स वाला गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे ऑपरेटर खेत में आसानी से स्पीड और लोड को कंट्रोल कर सकता है, वहीं पावर स्टीयरिंग की सुविधा लंबे समय तक काम करने पर भी थकान को कम करती है और संचालन को आसान बनाती है। यह ट्रैक्टर 55 लीटर के बड़े फ्यूल टैंक के साथ आता है, जिससे बिना रुके लंबे समय तक खेत में काम किया जा सकता है। इसमें शानदार लिफ्टिंग पावर है, जिससे यह सामान्य और भारी कृषि उपकरणों को आसानी से संभाल लेता है। यह 4WD व्हील ड्राइव वेरिएंट में उपलब्ध है, जो कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर ग्रिप, संतुलन और ताकत प्रदान करता है। स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी में Single Clutch / Dual Clutch / IPTO (Optional) सिस्टम दिया गया है, जो गियर बदलने को आसान बनाता है और फील्ड में काम करते समय ट्रैक्टर पर बेहतर नियंत्रण देता है। इसमें लगे Oil Immersed Brakes हर तरह की सड़कों और खेतों पर सुरक्षित, तेज और प्रभावी ब्रेकिंग सुनिश्चित करते हैं। साथ ही, इसे इस तरह से डिजाइन किया गया है कि इंजन धूल और गंदगी से सुरक्षित रहे, जिससे ट्रैक्टर की मजबूती और परफॉर्मेंस लंबे समय तक बनी रहती है।

स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी की कीमत

भारत में स्वराज 744 एफई 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर की कीमत ₹8.70 लाख से शुरू होकर ₹9.05 लाख तक जाती है। यह कीमत इसकी खूबियों और दमदार परफॉर्मेंस को ध्यान में रखकर तय की गई है। इस प्राइस रेंज में यह ट्रैक्टर किसानों के लिए एक किफायती और भरोसेमंद विकल्प है। कीमत अलग-अलग राज्यों और डीलरशिप के अनुसार थोड़ी बहुत बदल सकती है। यह रेंज भारतीय किसानों की खेती की जरूरतों और बजट को ध्यान में रखकर बनाई गई है।

भारत के टॉप 5 थ्रेशर - जानें, थ्रेशर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

भारत के बेस्ट 5 थ्रेशर - जानें, पूरी जानकारी

भारत में कृषि यंत्रीकरण तेजी से बढ़ रहा है और थ्रेशर आज किसानों की सबसे जरूरी मशीनों में शामिल हो चुका है। फसल कटाई के बाद अनाज को भूसे से अलग करने के लिए थ्रेशर समय, श्रम और लागत तीनों की बचत करता है। भारतीय बाजार में कई ब्रांड के थ्रेशर उपलब्ध हैं, लेकिन मजबूती, प्रदर्शन और किफायती कीमत के आधार पर कुछ ब्रांड किसानों के बीच ज्यादा लोकप्रिय हैं। इस लेख में हम भारत के टॉप 5 थ्रेशर ब्रांड के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं, जिनमें सोनालीका, दशमेश, पुन्नि, महिंद्रा और जगतजीत थ्रेशर शामिल हैं।

1. सोनालीका थ्रेशर: मजबूती और किफायती कीमत का भरोसेमंद विकल्प

सोनालीका थ्रेशर भारतीय किसानों के बीच लंबे समय से एक भरोसेमंद नाम बना हुआ है। ये थ्रेशर किफायती कीमतों पर कई अलग-अलग मॉडलों में

उपलब्ध हैं,जिससे किसान अपनी जरूरत और फसल के अनुसार सही मशीन चुन सकते हैं। सोनालीका थ्रेशर अपनी मजबूत बनावट, बेहतर थ्रेसिंग क्षमता और लंबे समय तक लगातार काम करने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। धान, गेहूं और अन्य फसलों की थ्रेसिंग में ये मशीनें बेहतरीन प्रदर्शन करती हैं। किसानों की सुविधा के लिए मेरीखेति जैसे प्लेटफॉर्म पर सोनालीका थ्रेशर की कीमत, फीचर्स और स्पेसिफिकेशन की विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

लोकप्रिय सोनालीका थ्रेशर इम्प्लीमेंट्स

- सोनालीका धान ट्रिपल एक्शन पावर टिलर संचालित
- सोनालीका HARAMBHA 28x36 डबल ब्लोअर, डबल स्पीड, सेल्फ-फीड (4 जॉइंट)
- सोनालीका 30x33 पीटीओ डबल व्हील बम्पर मॉडल, ट्रिपल एक्शन, सेल्फ-फीड
- सोनालीका 36x27 पीटीओ डबल व्हील

2. दशमेश थ्रेशर: मल्टीक्रॉप थ्रेसिंग के लिए दमदार मशीन

दशमेश थ्रेशर भी भारतीय बाजार में अपनी मजबूत बनावट और उच्च कार्यक्षमता के लिए जाने जाते हैं। ये थ्रेशर अलग-अलग फसलों की थ्रेसिंग के लिए डिजाइन किए गए हैं, जिससे किसान एक ही मशीन से कई फसलों का काम कर सकते हैं। दशमेश थ्रेशर की कीमत लगभग ₹5,03,000 से शुरू होती है, जो इनके फीचर्स और क्षमता को देखते हुए उचित मानी जाती है। दशमेश ब्रांड के थ्रेशर कठिन परिस्थितियों में भी लंबे समय तक काम करने की क्षमता रखते हैं, इसलिए बड़े और व्यावसायिक किसान इन्हें ज्यादा पसंद करते हैं।

लोकप्रिय दशमेश थ्रेशर इम्प्लीमेंट्स

- दशमेश डी.आर. मल्टीक्रॉप थ्रेशर (G-सीरीज़)
- दशमेश डी.आर. 30x37
- दशमेश डी.आर. मक्का थ्रेशर
- दशमेश मेज़ थ्रेशर

3. पुन्नि थ्रेशर: कम लागत में बेहतर परफॉर्मेंस

पुन्नि थ्रेशर अपनी किफायती कीमत और मजबूत डिजाइन के कारण खास तौर पर धान उत्पादक किसानों के बीच लोकप्रिय हैं। ये थ्रेशर सरल तकनीक के साथ बनाए जाते हैं, जिससे इनका रखरखाव आसान और खर्च कम रहता है। पुन्नि थ्रेशर कम ईंधन खपत में बेहतर आउटपुट देने के लिए जाने जाते हैं। छोटे और मध्यम किसान, जो कम बजट में भरोसेमंद थ्रेशर की तलाश में रहते हैं, उनके लिए पुन्नि थ्रेशर एक बेहतरीन विकल्प साबित होते हैं।

लोकप्रिय पुन्नि थ्रेशर इम्प्लीमेंट्स

- पुन्नि पैडी मल्टी थ्रेशर 4603

4. महिंद्रा थ्रेशर: भरोसे का नाम और आसान मेंटेनेंस

महिंद्रा ब्रांड भारतीय किसानों के बीच विश्वसनीयता का प्रतीक माना जाता है और महिंद्रा थ्रेशर भी इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। ये थ्रेशर किफायती कीमत पर मजबूत परफॉर्मेंस प्रदान करते हैं। महिंद्रा थ्रेशर की शुरुआती कीमत लगभग ₹1,95,000 से शुरू होती है, जिससे यह छोटे और मध्यम किसानों के लिए एक किफायती विकल्प बन जाता है। आसान मेंटेनेंस, मजबूत बॉडी और अच्छी थ्रेसिंग क्षमता के कारण महिंद्रा थ्रेशर लंबे समय तक उपयोग के लिए उपयुक्त हैं।

लोकप्रिय महिंद्रा थ्रेशर मॉडल

- महिंद्रा M55
- महिंद्रा-मल्टीक्रॉप थ्रेशर

5. जगतजीत थ्रेशर: मल्टीक्रॉप किसानों के लिए उपयोगी मशीन

जगतजीत थ्रेशर अपनी टिकाऊ बनावट और किफायती कीमत के कारण किसानों के बीच तेजी से

असली ताक़त
बेजोड़ काम
ज़बरदस्त कमाई

EICHER 485

45 HP रेंज

लोकप्रिय हो रहे हैं। ये थ्रेशर खास तौर पर मल्टीक्रॉपखेती करने वाले किसानों के लिए डिजाइन किए गए हैं, जिससे एक ही मशीन से अलग-अलग फसलों की थ्रेसिंग की जा सकती है। जगतजीत थ्रेशर लंबे समय तक निरंतर काम करने की क्षमता रखते हैं और इनका रखरखाव भी अपेक्षाकृत आसान होता है, जिससे कुल लागत कम रहती है।

लोकप्रिय जगतजीत थ्रेशर इम्प्लीमेंट्स

- जगतजीत मल्टी क्रॉप थ्रेशर
- जगतजीत पैडी थ्रेशर

अगर आप खेती में समय और मेहनत बचाने के साथ-साथ उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं, तो सही थ्रेशर का चुनाव बेहद जरूरी है। ऊपर बताए गए भारत के टॉप 5 थ्रेशर ब्रांड अपनी-अपनी खासियतों के कारण किसानों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करते हैं। फसल, बजट और ट्रैक्टर की क्षमता के अनुसार सही थ्रेशर चुनकर आप खेती को ज्यादा लाभदायक बना सकते हैं।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई: 50 एचपी श्रेणी में एक दमदार ट्रैक्टर

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर भारतीय किसानों के बीच अपनी मजबूती, भरोसेमंद परफॉर्मेंस और शानदार इंजन क्षमता के लिए जाना जाता है। यह ट्रैक्टर 50 hp श्रेणी में आता है और उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है, जिन्हें कल्टीवेटर, थ्रेशर, रोटावेटर और अन्य भारी कृषि उपकरणों के साथ नियमित रूप से काम करना पड़ता है। दमदार इंजन, उन्नत ट्रांसमिशन और मजबूत हाइड्रोलिक सिस्टम के कारण यह ट्रैक्टर खेत के हर तरह के काम को आसानी से संभालने में सक्षम है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई इंजन पावर और परफॉर्मेंस

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर में कंपनी द्वारा इंजन दिया गया है, जो अपनी श्रेणी में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। यह इंजन 50 HP की पावर जनरेट करता है और इसमें 3 सिलेंडर दिए गए हैं, जिससे ट्रैक्टर को स्मूद और लगातार ताकत मिलती है। इस ट्रैक्टर का इंजन 2700 सीसी डिस्प्लेसमेंट के साथ आता है, जो भारी लोड और कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। ट्रैक्टर का इंजन 1790 आरपीएम पर कार्य करता है। ईंधन आपूर्ति के लिए इसमें Inline फ्यूल इंजेक्शन पंप दिया गया है, जो इंजन को सटीक मात्रा में डीजल सप्लाई करता है। इससे ट्रैक्टर को बेहतर माइलेज मिलता है और ईंधन की बचत भी होती है। शक्तिशाली इंजन होने के कारण यह ट्रैक्टर लंबे समय तक बिना रुके खेत में काम करने में सक्षम है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रांसमिशन, क्लच और गियरबॉक्स की जानकारी

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर में ड्यूल क्लच दिया गया है, जो पीटीओ और ट्रैक्टर की मूवमेंट को अलग-अलग नियंत्रित करने में मदद करता है। ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें पार्शियल कांस्टेंट मेश ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर शिफ्टिंग स्मूद और टिकाऊ रहती है। इस ट्रैक्टर में कुल 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स

गियर दिए गए हैं, जो अलग-अलग कृषि कार्यों और सड़क पर चलाने के लिए उपयुक्त हैं। ट्रैक्टर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड 34.2 किमी/घंटा (रेटेड आरपीएम पर) है, जिससे खेत से मंडी तक ट्रांसपोर्ट का काम भी आसानी से किया जा सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई पीटीओ पावर और हाइड्रोलिक क्षमता

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर में उच्च गुणवत्ता वाला पीटीओ दिया गया है, जो 6-स्प्लाइन्ड शाफ्ट के साथ आता है। इसका पीटीओ 540 आरपीएम की गति पर काम करता है, जो 1906 ERPM पर प्राप्त होती है। इस पीटीओ सिस्टम की मदद से कल्टीवेटर, थ्रेशिंग मशीन और अन्य PTO संचालित उपकरण बेहतर स्पीड और दक्षता के साथ चलाए जा सकते हैं। हाइड्रोलिक सिस्टम की बात करें तो इस ट्रैक्टर में 1700 किलोग्राम की लिफ्टिंग कैपेसिटी दी गई है। मजबूत हाइड्रोलिक्स के कारण यह ट्रैक्टर भारी इम्प्लीमेंट्स को आसानी से उठाने और चलाने में सक्षम है, जिससे किसानों का काम तेज और आसान हो जाता है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ब्रेक, स्टीयरिंग और ड्राइवर कम्फर्ट

सुरक्षा और बेहतर नियंत्रण के लिए मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर में मल्टी-डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स दिए गए हैं, जो बेहतर ब्रेकिंग और लंबी उम्र सुनिश्चित करते हैं। स्टीयरिंग की बात करें तो इसमें किसानों की सुविधा के अनुसार मैनुअल स्टीयरिंग और पावर स्टीयरिंग दोनों विकल्प उपलब्ध हैं, जिससे लंबे समय तक काम करने पर भी थकान कम महसूस होती है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई टायर साइज, डायमेंशन्स और अन्य स्पेसिफिकेशन

टायर साइज की बात करें तो इस ट्रैक्टर में आगे की ओर 6.00 x 16 और पीछे की ओर 13.6 x 28 साइज के टायर दिए गए हैं। इस ट्रैक्टर की कुल लंबाई 3320 मिमी, चौड़ाई 1705 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 360 मिमी है। इसका व्हीलबेस 1830 मिमी है, जो खेत में बेहतर संतुलन प्रदान करता है। ट्रैक्टर का कुल वजन लगभग 1915 किलोग्राम है, जिससे यह भारी कार्यों के दौरान भी स्थिर बना रहता है। लंबे समय तक काम करने के लिए इसमें 47 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है।इलेक्ट्रिकल सिस्टम की बात करें तो इसमें 12V 75Ah बैटरी और 12V 36A अल्टरनेटर दिया गया है, जो सभी इलेक्ट्रिकल फीचर्स को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर की कीमत?

मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई एक 50 HP ट्रैक्टर है, जिसकी भारतीय बाजार में एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹7.59 लाख से ₹7.90 लाख तक है। हालांकि, राज्य, जिला और डीलरशिप के अनुसार कीमत में थोड़ा अंतर हो सकता है। फीचर्स, पावर और भरोसेमंद ब्रांड वैल्यू को देखते हुए यह ट्रैक्टर अपनी श्रेणी में एक वैल्यू-फॉर-मनी विकल्प माना जाता है।

merikheti.com की इस पोस्ट में आपने मैसी फर्ग्यूसन 245 डीआई ट्रैक्टर के इंजन, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है, जो ताकत, टिकाऊपन और बेहतर परफॉर्मेंस की तलाश में हैं। अगर आप मैसी फर्ग्यूसन या किसी अन्य कंपनी के ट्रैक्टर मॉडल की जानकारी चाहते हैं, तो ट्रैक्टर बर्ड की वेबसाइट पर जाकर आसानी से सर्च कर सकते हैं, जहां आपको ट्रैक्टर से जुड़ी हर जरूरी जानकारी एक ही जगह मिल जाएगी।

भारत के टॉप 5 कंबाइन हार्वेस्टर : जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

बेस्ट 5 कंबाइन हार्वेस्टर - किसानों की पहली पसंद

आज के दौर में कृषि कार्यों में समय, श्रम और लागत की बचत सबसे बड़ी जरूरत बन चुकी है। खासकर गेहूं, धान, मक्का और तिलहन जैसी फसलों की कटाई-मड़ाई के लिए कंबाइन हार्वेस्टर किसानों के लिए वरदान साबित हो रहे हैं। एक ही मशीन से कटाई, थ्रेशिंग और सफाई का कार्य होने से न केवल फसल नुकसान कम होता है, बल्कि उत्पादन क्षमता भी कई गुना बढ़ जाती है भारतीय बाजार में कई कंपनियों के आधुनिक और शक्तिशाली कंबाइन हार्वेस्टर उपलब्ध हैं, जिनमें अलग-अलग क्षमता, फीचर्स और कीमत के विकल्प मौजूद हैं। सही कंबाइन हार्वेस्टर का चुनाव खेत के आकार, फसल के प्रकार और बजट के अनुसार करना बेहद जरूरी होता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इस लेख में हम आपको टॉप 5 कंबाइन हार्वेस्टर के कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर की सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

1. करतार 4000 हार्वेस्टर

करतार 4000 हार्वेस्टर फसल काटने का असली राजा है। यह इस समय उपलब्ध सर्वोत्तम प्रदर्शन, उत्पादकता और सेवाक्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। करतार 4000 हार्वेस्टर अब नई विशेषताओं और फीचर्स के साथ भारत का सबसे लोकप्रिय और आदर्श कंबाइन हार्वेस्टर बन गया है। इस लेख में हम आपको इस कंबाइन हार्वेस्टर से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

करतार 4000 हार्वेस्टर मुख्य विशेषताएँ

करतार 4000 हार्वेस्टर में शक्तिशाली 101 एचपी का इंजन आता है, इस में एक उच्च शक्ति वाला 6-सिलेंडर डीजल इंजन (@ 2200 आरपीएम) है। एक बड़ा टॉर्क रिज़र्व, सरल डिज़ाइन, कम रखरखाव लागत उच्च ईंधन दक्षता और पर्यावरण के अनुकूल है। ये फसल की कटाई 100 mm से 700 mm की ऊंचाई से करता है। इसके कटर की चौड़ाई 14 फ़ीट तक है। ये एक बार में 14 फ़ीट तक का एरिया कवर करता है। इसके फ्यूल टैंक की बात करे तो इसका फ्यूल टैंक 380 लीटर का है, जो की बहुत बड़ा है, कंबाइन हार्वेस्टर से लंबे समय तक कार्य

किया जा सकता है। करतार 4000 हार्वेस्टर में फ्रंट टायर 18.4/15/30 और रियर टायर 9.00 X 16 के दिए गए है। करतार 4000 हार्वेस्टर गेहूं, धान और मक्का आदि जैसी सभी पारंपरिक अनाज फसलों की कटाई के लिए डिज़ाइन किया गया है। करतार 4000 हार्वेस्टर की कीमत ₹ 21.50 लाख तक है। करतार 4000 हार्वेस्टर एक घंटे में 4.5 एकड़ गेहूं और 4 एकड़ धान की कटाई आसानी से कर सकती हैं।

2. विशाल 366 हार्वेस्टर

विशाल 366 हार्वेस्टर भी मल्टीक्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर है जो कि फसलों की कटाई कम समय में अच्छे से कर देता है। विशाल 366 हार्वेस्टर में 50-70 HP का शक्तिशाली इंजन दिया गया है। ये एक ट्रैक्टर ड्रिवेन हार्वेस्टर है जिससे कई फसलों की कटाई का कार्य आसानी से किया जा सकता है। इस कंबाइन हार्वेस्टर में थ्रेशिंग ड्रम गेहूं के लिए रैस्प बार तथा धान के लिए पेग टूथ प्रकार का दिया गया है। थ्रेशिंग ड्रम की चौड़ाई 1145 मिमी है। गेहूं के लिए ड्रम का बाहरी व्यास 605 मिमी और धान के लिए 600 मिमी रखा गया है, जिससे फसल की प्रभावी मड़ाई सुनिश्चित होती है।

विशाल 366 हार्वेस्टर मुख्य विशेषताएँ

मशीन में पांच स्ट्रॉ वॉकर दिए गए हैं, जो क्लोज्ड रैक टाइप के हैं और दोनों किनारों पर दांतेदार (सेरेटेड) साइड एज के साथ प्रत्येक स्ट्रॉ वॉकर में 6 स्टेप्स दिए गए हैं। प्रत्येक स्ट्रॉ वॉकर की लंबाई 3560 मिमी और चौड़ाई 215 मिमी है, जिसका कुल क्षेत्रफल 0.785 वर्ग मीटर है। इनका लिफ्ट/थ्रो 75/75 मिमी है और 1750 RPM इंजन स्पीड पर 153 ऑस्सीलेशन प्रति मिनट मिलता है। स्ट्रॉ वॉकर की स्थिति कंबाइन के ऊपर, ट्रैक्टर के पीछे रखी गई है। इस कंपनी का सम्राट कंबाइन हार्वेस्टर आधुनिक फीचर्स के साथ में आता है। जो की गेहूं, धान, सोयाबीन, सूरजमुखी और सरसों आदि जैसी सभी पारंपरिक फसलों की कटाई के लिए डिज़ाइन किया गया है। कुल मिलाकर, विशाल 366 ट्रैक्टर चालित कंबाइन हार्वेस्टर के आयाम लंबाई में 7595 मिमी, चौड़ाई में 4345 मिमी और ऊंचाई में 3464 मिमी हैं। यह कंबाइन हार्वेस्टर मजबूत बनावट, बेहतर थ्रेशिंग-क्लीनिंग क्षमता और बड़े कार्य क्षेत्र के कारण किसानों के लिए एक भरोसेमंद और लाभदायक विकल्प है।

3. जॉन डियर W70 ग्रेन हार्वेस्टर

जॉन डियर W70 ग्रेन हार्वेस्टर में John Deere 4039 मॉडल का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 2100 RPM की रेटेड स्पीड पर कार्य करता है। यह इंजन 100 हॉर्सपावर की क्षमता प्रदान करता है, जिससे भारी फसलों की कटाई और मड़ाई भी आसानी से की जा सकती है। इंजन में टर्बो चार्ज तकनीक और 4 सिलेंडर दिए गए हैं।

जॉन डियर W70 ग्रेन हार्वेस्टर मुख्य विशेषताएँ

इस मशीन में 14 फीट चौड़ा कटर बार दिया गया है, जो बड़े क्षेत्र में तेजी से कटाई करने में सहायक है। थ्रेशिंग सिस्टम में रास्प बार और स्पाइक टूथ का संयोजन दिया गया है, जिससे अलग-अलग प्रकार की फसलों की प्रभावी मड़ाई संभव होती है। थ्रेशिंग सिलेंडर का आकार 1020 x 610 मिमी (चौड़ाई x व्यास) है, जो उच्च थ्रेशिंग क्षमता प्रदान करता है। ट्रांसमिशन सिस्टम में 4 फॉरवर्ड और 1 रिवर्स गियर दिए गए हैं। इसमें सिंगल, ड्राई क्लच लगाया गया है, जो सरल संचालन और कम रखरखाव सुनिश्चित करता है। टायर साइज की बात करें तो आगे की ओर 16.9 x 28 (11 PR) और पीछे की ओर (12 PR) टायर दिए गए हैं, जो खेत में बेहतर पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। इस कंबाइन हार्वेस्टर की ईंधन टैंक क्षमता 240 लीटर है, जिससे यह लंबे समय तक बिना रुके काम कर सकता है। यह कंबाइन हार्वेस्टर धान, गेहूँ, सोयाबीन, क्लस्टर बीन, चना (चिकी मटर), काला चना (काला ग्राम), सूरजमुखी, धनिया और सरसों जैसी अनेक फसलों की कटाई-मड़ाई के लिए उपयुक्त है। जॉन डियर W70 ग्रेन हार्वेस्टर की कीमत ₹ 2900000 लाख तक है।

4. स्वराज 8200 हार्वेस्टर

इस कंबाइन हार्वेस्टर में MCVNC35TI110CE4 मॉडल का आधुनिक डीज़ल इंजन लगाया गया है। यह इंजन डायरेक्ट इंजेक्शन, फोर-स्ट्रोक, टर्बोचार्ज्ड इंटरकूलर तकनीक पर आधारित है, जो बेहतर पावर और ईंधन दक्षता प्रदान करता है। इंजन की अधिकतम क्षमता 73.5 kW @ 2200 RPM है ।इंजन की सुरक्षा और लंबे समय तक भरोसेमंद प्रदर्शन के लिए इसमें ड्राई टाइप हेवी ड्यूटी एयर क्लीनर दिया गया है।

स्वराज 8200 हार्वेस्टर मुख्य विशेषताएँ

इस मशीन में 4.2 मीटर (14 फीट) चौड़ाई का कटर बार दिया गया है, जो बड़े क्षेत्र में तेज़ और समान कटाई करने में सक्षम है। न्यूनतम कटाई ऊँचाई 35 मिमी है, जिससे फसल की जड़ों के पास से भी प्रभावी कटाई संभव होती है और खेत में कम नुकसान होता है।

थ्रेशिंग ड्रम की चौड़ाई 1274 मिमी और व्यास 600 मिमी है, जो उच्च क्षमता वाली मड़ाई सुनिश्चित करता है। थ्रेशिंग ड्रम की गति 525 से 1125 RPM के बीच समायोजित की जा सकती है। स्पीड और अन्य सेटिंग्स का मैकेनिकल एडजस्टमेंट उपलब्ध है, जिससे विभिन्न फसलों के अनुसार थ्रेशिंग और सफाई की गुणवत्ता बेहतर बनी रहती है। स्वराज 8200 हार्वेस्टर की कीमत ₹ 27.50 लाख तक है।

5. प्रीत 987 हार्वेस्टर

इस कंबाइन हार्वेस्टर में पीसीएच-1049 मॉडल का शक्तिशाली इंजन लगाया गया है, जो 2200 RPM पर 101 हॉर्सपावर की उच्च क्षमता प्रदान करता है। इसमें 6 सिलेंडर दिए गए हैं, जो भारी कार्य के दौरान भी स्मूद और स्थिर प्रदर्शन सुनिश्चित करते हैं।

प्रीत 987 हार्वेस्टर मुख्य विशेषताएँ

ट्रांसमिशन सिस्टम में दो विकल्प उपलब्ध हैं— 3 फॉरवर्ड + 1 रिवर्स तथा 4 फॉरवर्ड + 1 रिवर्स गियर। गियर स्पीड को लो (L) और हाई (H) रेंज में विभाजित किया गया है। कटर बार व्यवस्था गेहूं, धान एवं अन्य फसलों के लिए 14 फीट (4.3 मीटर)चौड़ाई के साथ दी गई है। कटाई की ऊँचाई 65 मिमी से 127 मिमी तक समायोजित की जा सकती है। इसमें 57 ब्लेड और 57 गार्ड लगे हैं, जबकि नाइफ स्ट्रोक 85 मिमी है। रील की गति लगभग 915 RPM रहती है और फीडर हाउसिंग चेन टाइप फीड रैक के साथ आती है। मक्का और सूरजमुखी के लिए अलग से 11.25 फीट (3.4 मीटर) और 10.25 फीट (3.12 मीटर) चौड़ाई के कटर विकल्प उपलब्ध हैं, जिनमें 6 या 7 पंक्तियाँ तथा 610/457 मिमी का रो स्पेस दिया गया है।

थ्रेशिंग मैकेनिज्म में गेहूं के लिए रास्प बार, धान के लिए पेग टूथ और मक्का के लिए रास्प बार थ्रेशर ड्रम दिया गया है। थ्रेशर ड्रम की चौड़ाई 1250 से 1265 मिमी और डायमीटर 605 मिमी है। ड्रम की स्पीड 540 से 1200 RPM के बीच रखी गई है, जिसे यांत्रिक भिन्नता (मैकेनिकल एडजस्टमेंट) द्वारा बदला जा सकता है।

इस मशीन में 5 स्टेप्स वाले स्ट्रॉ वॉकर लगाए गए हैं, जिनकी चौड़ाई 234 मिमी और लंबाई 3770 मिमी है। यह व्यवस्था भूसे और अनाज के बेहतर पृथक्करण में मदद करती है। सफाई प्रणाली में ऊपरी छलनी का क्षेत्रफल 2.42 वर्ग मीटर तथा निचली छलनी का क्षेत्रफल 1.77 वर्ग मीटर है, जिससे साफ और गुणवत्तापूर्ण अनाज प्राप्त होता है। टायर साइज में आगे की ओर 18.4 / 15 x 30 (12 PR / 14 PR) और पीछे की ओर 9.00 x 16 (16 PR) टायर दिए गए हैं, जो खेत में बेहतर ग्रिप और संतुलन प्रदान करते हैं। प्रीत 987 हार्वेस्टर की कीमत ₹ 23.50 लाख तक है।

वीएसटी के टॉप 3 कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

जानें, वीएसटी के टॉप 3 मिनी ट्रैक्टर की पूरी जानकारी

भारत में छोटे और मध्यम किसानों के लिए कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर खेती का एक अहम हिस्सा बन चुके हैं। सीमित खेत क्षेत्र, बागवानी, सब्ज़ी उत्पादन और रोज़मर्रा के कृषि कार्यों के लिए ऐसे ट्रैक्टरों की मांग तेजी से बढ़ रही है, जो कम ईंधन में बेहतर प्रदर्शन दें और बजट में भी फिट बैठें। वीएसटी कंपनी इस सेगमेंट में भरोसेमंद नाम है, जो मजबूत इंजन, सरल ऑपरेशन और टिकाऊ क्वालिटी के लिए जानी जाती है। इस लेख में हम वीएसटी के टॉप 3 कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर – वीएसटी 932 डीआई, वीएसटी एमटी 180 डी और वीएसटी एमटी 224-1डी 4डब्ल्यूडी – के इंजन, फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत की जानकारी दे रहे हैं, ताकि किसान भाई अपनी जरूरत और बजट के अनुसार सही ट्रैक्टर का चुनाव कर सकें।

1. वीएसटी 932 डीआई

वीएसटी 932 डीआई ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको 32 HP का इंजन मिलता है,जिसमें 3 सिलिंडर लगे होते हैं। ट्रैक्टर का इंजन 2400 आरपीएम पर कार्य करता है। ट्रैक्टर के इंजन की क्यूबिक कैपेसिटी 1642 CC इस ट्रैक्टर में आपको मिलती है। ट्रैक्टर के इंजन को ठंडा रखने के लिए इस ट्रैक्टर में आपको वाटर कूल्ड इंजन मिलता है साथ ही इस ट्रैक्टर में ड्राई टाइप का एयर फ़िल्टर कंपनी ने प्रदान किया है। वीएसटी 932 डीआई ट्रैक्टर में कंपनी ने सिंक्रोमेश ट्रांसमिशन प्रदान किया है। ट्रैक्टर में आपको ड्राई ब्रेक मिलते है जो की ट्रैक्टर का अच्छा नियंत्रण प्रदान करते है, इस ट्रैक्टर में कंपनी ने पावर स्टीयरिंग प्रदान किया है। वीएसटी 932 डीआई ट्रैक्टर में 1250 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग कैपेसिटी और 6.00 X 12 फ्रंट तथा 9.50 X 20 रियर टायर्स हैं। इसका कुल वजन 1240 किलोग्राम है, जो इसे संतुलित और स्थिर बनाता है। वीएसटी 932 डीआई ट्रैक्टर की कीमत ₹ 6.31 - 6.56 लाख के बीच है। यह कीमत विभिन्न राज्यों और डीलरशिप के अनुसार थोड़ी भिन्न हो सकती है। फिर भी, यह ट्रैक्टर एक बजट-फ्रेंडली विकल्प है, जो छोटे और मध्यम स्तर के किसानों के लिए काफी लाभदायक साबित हो सकता है।

2. वीएसटी एमटी 180 डी

वीएसटी एमटी 180 डी को विशेष रूप से उन किसानों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिन्हें कम हॉर्सपावर में भी शक्तिशाली और भरोसेमंद ट्रैक्टर की जरूरत होती है। इसमें 19 HP का दमदार इंजन दिया गया है, जो 3 सिलेंडर और लगभग 900 सीसी क्षमता के साथ आता है। वीएसटी एमटी 180 डी को विशेष रूप से उन किसानों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिन्हें कम हॉर्सपावर में भी शक्तिशाली और भरोसेमंद ट्रैक्टर की जरूरत होती है। इसमें 19 हॉर्सपावर का दमदार इंजन दिया गया है, जो 3 सिलेंडर और लगभग 900 सीसी क्षमता के साथ आता है। यह इंजन खेत के रोज़मर्रा के कार्यों के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है और लंबे समय तक बिना थके काम करने में सक्षम है।ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन दिया गया है। इसमें 6 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर उपलब्ध हैं, वीएसटी एमटी 180 डी में 18 लीटर की ईंधन टैंक क्षमता दी गई है, जो इस श्रेणी के ट्रैक्टरों में एक बड़ी खासियत मानी जाती है। इस ट्रैक्टर के फ्रंट टायर 5.00 x 12 साइज के हैं, जबकि रियर टायर 8.00 x 18 साइज में दिए गए हैं। इन टायरों का खास ट्रेड पैटर्न खेतों में बेहतर पकड़, स्थिरता और संतुलन प्रदान करता है। वीएसटी एमटी 180 डी की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता 500 किलोग्राम है। कीमत की बात करें तो वीएसटी एमटी 180 डी ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग ₹4.12 लाख से ₹4.28 लाख के बीच रहती है। हालांकि, राज्य, आरटीओ शुल्क और डीलरशिप के अनुसार इसमें थोड़ा अंतर हो सकता है।

3. वीएसटी एमटी 224 - 1डी 4डब्ल्यूडी

वीएसटी एमटी 224 - 1डी 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर के इंजन की बात करें तो इसमें 22 HP की क्षमता वाला दमदार इंजन दिया गया है, जिसमें 3 सिलेंडर लगे हैं। यह इंजन 3000 RPM पर प्रभावी रूप से कार्य करता है और इसकी क्यूबिक कैपेसिटी 979.5 CC है। इंजन को ठंडा रखने के लिए कंपनी ने इसमें वॉटर कूल्ड सिस्टम दिया है, वहीं बेहतर परफॉर्मेंस के लिए ड्राई टाइप एयर फिल्टर भी उपलब्ध कराया गया है। इस ट्रैक्टर में स्लाइडिंग मेश ट्रांसमिशन देखने को मिलता है। बेहतर नियंत्रण और सुरक्षा के लिए इसमें ड्राई ब्रेक्स दिए गए हैं, जबकि आसान संचालन के लिए पावर स्टीयरिंग की सुविधा भी मिलती है। वीएसटी एमटी 224 - 1डी 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर में 750 किलोग्राम की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग क्षमता है। इसके फ्रंट टायर 5.00 X 12 और रियर टायर 8.00 X 18 साइज के हैं। ट्रैक्टर का कुल वजन 750 किलोग्राम है, जिससे यह खेत में काम करते समय संतुलित और स्थिर बना रहता है। वीएसटी एमटी 224 - 1डी 4डब्ल्यूडी ट्रैक्टर की कीमत लगभग 3.84 लाख से 3.99 लाख रुपये के बीच रखी गई है। हालांकि, राज्य और डीलर के अनुसार कीमत में थोड़ा अंतर हो सकता है। कुल मिलाकर, यह ट्रैक्टर कम बजट में बेहतर प्रदर्शन देने वाला विकल्प है, जो छोटे और मध्यम किसानों के लिए काफी उपयोगी साबित हो सकता है।

अगर आप कम बजट में भरोसेमंद और टिकाऊ कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर की तलाश में हैं, तो वीएसटी के ये तीनों मॉडल अलग-अलग जरूरतों को अच्छी तरह पूरा करते हैं। वीएसटी 932 डीआई ज्यादा पावर और मजबूत हाइड्रोलिक्स के कारण छोटे से मध्यम कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त है। वहीं वीएसटी एमटी 180 डी कम हॉर्सपावर में बेहतर माइलेज और रोज़मर्रा के हल्के कार्यों के लिए एक किफायती विकल्प है। अगर आपको 4WD की जरूरत है और बागवानी या संकरी जगहों पर काम करना है, तो वीएसटी एमटी 224-1डी 4डब्ल्यूडी कम कीमत में शानदार प्रदर्शन देता है। कुल मिलाकर, सही मॉडल का चयन आपकी खेती के प्रकार, भूमि की स्थिति और बजट पर निर्भर करता है, लेकिन वीएसटी के ये कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर किसानों के लिए एक भरोसेमंद और लाभदायक निवेश साबित हो सकते हैं।

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स: जानें, ट्रैक्टर कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

फार्मट्रैक एक भरोसेमंद और लोकप्रिय ट्रैक्टर ब्रांड है, जिसे Escorts Kubota Limited द्वारा बनाया जाता है। यह ब्रांड अपनी मजबूत बनावट और दमदार परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। ट्रैक्टर कम ईंधन में ज्यादा काम करने की क्षमता रखते हैं। इनमें आधुनिक तकनीक और एडवांस फीचर्स का इस्तेमाल किया जाता है। फार्मट्रैक ट्रैक्टर छोटे, मध्यम और बड़े सभी किसानों की जरूरतों को पूरा करते हैं। यही कारण है, कि फार्मट्रैक किसानों के बीच एक विश्वसनीय और पसंदीदा नाम बन चुका है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम आपको एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड के फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर के बारे में जानकारी साझा करेंगे।

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर के फीचर्स

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स इस ट्रैक्टर में 43.3 एचपी का पीटीओ पावर मिलता है, जिसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर वाला गियर बॉक्स दिया गया है। बेहतर सुरक्षा और कंट्रोल के लिए इसमें मल्टी प्लेट ऑयल इमर्स्ड ब्रेक लगाए गए हैं। ट्रैक्टर के साथ 5000 घंटे या 5 वर्ष की वारंटी मिलती है, जो इसकी विश्वसनीयता को दर्शाती है। इसमें ड्यूल क्लच सिस्टम दिया गया है, जिससे काम करना आसान और स्मूद हो जाता है। स्टीयरिंग के लिए पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है, जिससे खेतों में चलाना अधिक आरामदायक होता है। इसकी वजन उठाने की क्षमता 1800 किलोग्राम है, जो भारी उपकरणों को संभालने में सक्षम बनाती है। यह 2 व्हील ड्राइव (2WD) ट्रैक्टर है और इसका इंजन रेटेड आरपीएम 1850 है, जो बेहतर परफॉर्मेंस और ईंधन दक्षता प्रदान करता है।

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर की स्पेसिफिकेशन

यह ट्रैक्टर 50 एचपी की शक्ति के साथ 3 सिलेंडर और 3443 सीसी इंजन क्षमता से लैस है, जिसका इंजन रेटेड आरपीएम 1850 है और यह 209 एनएम का दमदार टॉर्क पैदा करता है। इसमें वेट टाइप एयर फिल्टर और वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम दिया गया है, जिससे इंजन की परफॉर्मेंस लंबे समय तक बनी रहती है। इसका पीटीओ पावर 43.3 एचपी है और पीटीओ आरपीएम 540 @ 1810 rpm (मल्टी-स्पीड रिवर्स PTO) के साथ आता है, जो विभिन्न कृषि उपकरणों

कोआसानी से चलाने में सक्षम बनाता है। ट्रांसमिशन के लिए इसमें डुअल क्लच और 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स दिया गया है, जिसकी फॉरवर्ड स्पीड 35.5 किमी/घंटा तक और रिवर्स स्पीड 4.3 से 15.3 किमी/घंटा तक है। साथ ही बैलेंस्ड पावर स्टीयरिंग से संचालन बेहद आरामदायक हो जाता है। हाइड्रोलिक्स की बात करें तो इसकी लिफ्टिंग क्षमता 1800 किलोग्राम है और इसमें ADDC (ऑटोमैटिक डेप्थ एंड ड्राफ्ट कंट्रोल) सिस्टम दिया गया है, जबकि सुरक्षा के लिए मल्टी-प्लेट ऑयल-इमर्स्ड ब्रेक्स लगाए गए हैं। इसके आयामों में कुल वजन 2245 किलोग्राम, व्हीलबेस 2145 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 377 मिमी है, साथ ही 60 लीटर की फ्यूल टैंक क्षमता लंबे समय तक काम करने में सहायक है। अन्य विशेषताओं में आगे के टायर का साइज 6.50 x 16 और पीछे के टायर का साइज 14.9 x 28 है, तथा यह ट्रैक्टर 5 साल या 5000 घंटे की वारंटी के साथ आता है, जो इसकी मजबूती और भरोसे को दर्शाता है।

फार्मट्रैक 45 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर की कीमत

Farmtrac 45 Powermax की कीमत भारत में लगभग ₹7.45 लाख से ₹7.75 लाख के बीच होती है। यह कीमत अलग-अलग राज्यों में टैक्स पॉलिसी, आरटीओ चार्ज, इंश्योरेंस और सब्सिडी के कारण कम या ज्यादा हो सकती है। कुछ राज्यों में सरकारी योजनाओं और कृषि अनुदान के तहत ट्रैक्टर पर छूट भी मिलती है, जिससे इसकी कुल कीमत और किफायती हो जाती है।

Farmtrac 45 Powermax अपनी मजबूत बनावट, दमदार इंजन और भरोसेमंद परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। 50 एचपी पावर और 43.3 पीटीओ एचपी के साथ यह ट्रैक्टर खेती के लगभग हर काम के लिए उपयुक्त होने के साथ साथ किफायती भी है। इसी वजह से यह किसानों के बीच एक लोकप्रिय और भरोसेमंद विकल्प बना हुआ है।

सोनालीका डीआई 42 RX: 42 एचपी श्रेणी में दमदार ट्रैक्टर

सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

सोनालीका भारत की शीर्ष 500 कंपनियों में से एक है और इसे मैन्युफैक्चरिंग उत्कृष्टता, तकनीकी नेतृत्व और किसान-प्रथम दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। सोनालीका ब्रांड की ट्रैक्टर उद्योग में किसानों के लिए मूल्य पारदर्शिता लाने में प्रमुख भूमिका रही है। सोनालीका 2026 में किसानों को सशक्त बनाने, ग्रामीण समृद्धि को मज़बूत करने और वैश्विक कृषि मशीनीकरण क्षेत्र में भारत के नेतृत्व को बढ़ाने के 30 गौरवशाली वर्ष पूरे होने का जश्न भी मना चुका है। मेरीखेती के इस लेख में आज हम कंपनी के सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत के बारे में जानेंगे।

सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर के फीचर्स

सोनालीका डीआई 42 RX एक 42 एचपी के शक्तिशाली इंजन और 2893 सीसी की दमदार क्षमता के साथ आता है, जो इसे हर तरह के कृषि कार्यों के लिए मजबूत और भरोसेमंद बनाता है।

इसकी बेहतरीन इंजीनियरिंग लंबे समय तक लगातार काम करने पर भी शानदार परफॉर्मेंस बनाए रखती है, साथ ही स्मूद ऑपरेशन और बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी प्रदान करती है। पावर, माइलेज और टिकाऊपन का संतुलित संयोजन होने के कारण यह ट्रैक्टर खेत में काम को तेज, आसान और ज्यादा उत्पादक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर में 35.7 एचपी की पीटीओ पावर, 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर बॉक्स, ड्राई डिस्क ब्रेक या ऑयल इमर्स्ड ब्रेक का विकल्प, 2000 घंटे या 2 वर्ष की वारंटी, सिंगल या ड्यूल क्लच (ऑप्शनल), मैकेनिकल या पावर स्टीयरिंग (ऑप्शनल), 1600 किलोग्राम की वजन उठाने की क्षमता, 2 व्हील ड्राइव सिस्टम और 2000 आरपीएम का इंजन रेटेड स्पीड मिलता है, जो इसे ताकत, नियंत्रण और भरोसे का बेहतरीन संयोजन बनाता है।

सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर के स्पेसिफिकेशन

सोनालीका डीआई 42 RX में एडवांस्ड तकनीक का उपयोग किया गया है, जो इसके परफॉर्मेंस और कंफर्ट दोनों को बेहतर बनाती है और इसे रोजमर्रा की खेती की जरूरतों के लिए एक भरोसेमंद विकल्प बनाती है। इसमें 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स वाला गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे ऑपरेटर खेत में आसानी से स्पीड और लोड कंट्रोल कर सकता है, साथ ही मैकेनिकल या पावर स्टीयरिंग (ऑप्शनल) की सुविधा लंबे समय तक काम करते हुए थकान को कम करती है। यह ट्रैक्टर 55 लीटर के बड़े फ्यूल टैंक के साथ आता है, जिससे बिना रुके लंबे समय तक काम संभव हो पाता है, जबकि 1600 किलोग्राम की दमदार लिफ्टिंग कैपेसिटी इसे भारी इम्प्लीमेंट्स उठाने में सक्षम बनाती है। सोनालीका डीआई 42 RX 2WD व्हील ड्राइव वेरिएंट में उपलब्ध है और इसमें सिंगल या ड्यूल क्लच (ऑप्शनल) सिस्टम दिया गया है, जो गियर शिफ्टिंग को आसान बनाकर बेहतर कंट्रोल देता है। सुरक्षा के लिए इसमें ड्राई डिस्क ब्रेक या ऑयल इमर्स्ड ब्रेक का विकल्प मिलता है, जो हर तरह के रास्तों और खेतों में प्रभावी ब्रेकिंग सुनिश्चित करता है, साथ ही ड्राई टाइप एयर फिल्टर इंजन तक साफ हवा पहुंचाकर इसकी परफॉर्मेंस और लाइफ को बढ़ाने में मदद करता है।

सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर की कीमत

भारत में सोनालीका डीआई 42 RX ट्रैक्टर की कीमत ₹ 6,09,766 से ₹ 6,36,169 के बीच रखी गई है, जो इसे मध्यम श्रेणी के किसानों के लिए एक किफायती और व्यावहारिक विकल्प बनाती है। यह प्राइस रेंज खास तौर पर भारतीय किसानों की खेती से जुड़ी जरूरतों, कार्यक्षमता और बजट को ध्यान में रखकर तय की गई है। यह कीमत अलग अलग राज्यों में वहां की टैक्स पॉलिसी के चलते थोड़ी कम ज्यादा हो सकती है।

निष्कर्ष

सोनालीका डीआई 42 RX एक 42 एचपी और 2893 सीसी इंजन वाला शक्तिशाली ट्रैक्टर है, जो हर तरह के कृषि कार्यों में शानदार परफॉर्मेंस देता है। इसमें 35.7 एचपी पीटीओ पावर, 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर बॉक्स, 1600 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता और 2WD सिस्टम मिलता है, जबकि मैकेनिकल या पावर स्टीयरिंग, सिंगल या ड्यूल क्लच और ड्राई डिस्क या ऑयल इमर्स्ड ब्रेक के विकल्प इसे ज्यादा सुरक्षित और आरामदायक बनाते हैं। 55 लीटर का फ्यूल टैंक, 2000 आरपीएम इंजन स्पीड और ड्राई टाइप एयर फिल्टर इसकी कार्यक्षमता और टिकाऊपन को बढ़ाते हैं। इसकी कीमत ₹6,09,766 से ₹6,36,169 के बीच है, जो इसे किसानों के लिए एक किफायती और वैल्यू फॉर मनी ट्रैक्टर बनाती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स 2WD: 42 एचपी कैटेगिरी में सबसे लोकप्रिय ट्रैक्टर

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर एक भरोसेमंद और दमदार कृषि मशीन है, जिसे खास तौर पर भारतीय किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह ट्रैक्टर 39 एचपी पीटीओ पावर के साथ आता है, जो खेती के कई कार्यों जैसे जुताई, बुवाई, ढुलाई और रोटावेटर जैसे उपकरणों को आसानी से संभालने में सक्षम है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर वाला मजबूत गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे खेत में काम करते समय सही स्पीड और बेहतर नियंत्रण मिलता है। ट्रैक्टर में मल्टी डिस्क ऑयल इमर्स्ड ब्रेक लगाए गए हैं, जो फिसलन कम करते हैं और ज्यादा सुरक्षा प्रदान करते हैं। इसके साथ ही कंपनी 6000 घंटे या 6 साल की लंबी वारंटी देती है, जो इसकी गुणवत्ता और मजबूती को दर्शाती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर इंजन पावर

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर के बारे में विस्तार से बात करें तो यह 42 एचपी कैटेगरी का ट्रैक्टर है, जिसमें 2500 सीसी का 4 सिलेंडर इंजन दिया गया है। यह इंजन 2000 आरपीएम पर बेहतरीन परफॉर्मेंस देता है और इसका पीटीओ पावर 39 एचपी है, जो विभिन्न कृषि उपकरणों के साथ शानदार तालमेल बनाता है। इसमें डायाफ्राम टाइप सिंगल क्लच दिया गया है, जिससे गियर बदलना आसान होता है। तेल में डूबे मल्टी डिस्क ब्रेक मजबूत पकड़ और सुरक्षित ड्राइविंग अनुभव देते हैं।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर क्लच, स्टीयरिंग, लिफ्टिंग कैपेसिटी

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर में सिंगल क्लच दिया गया है, जो संचालन को सरल और स्मूथ बनाता है। स्टीयरिंग के लिए इसमें मैकेनिकल स्टीयरिंग के साथ पावर स्टीयरिंग का विकल्प भी मिलता है, जिससे किसान अपनी जरूरत और बजट के अनुसार चुनाव कर सकते हैं। यह ट्रैक्टर 1800 किलोग्राम तक वजन उठाने की क्षमता रखता है, जो भारी कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्त है। 2 व्हील ड्राइव सिस्टम और 2200 आरपीएम का इंजन रेटेड स्पीड इसे खेत और सड़क दोनों पर संतुलित प्रदर्शन देने में मदद करता है।

ट्रांसमिशन

अगर इसके फायदे और नुकसान की बात करें, तो न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर एक पावरफुल,

फ्यूल एफिशिएंट और टिकाऊ ट्रैक्टर है, जो लंबे समय तक लगातार काम करने के लिए उपयुक्त है। हालांकि इसकी कीमत कुछ बजट-संवेदनशील किसानों के लिए थोड़ी अधिक लग सकती है, लेकिन जो परफॉर्मेंस और फीचर्स यह प्रदान करता है, वे इस कीमत को काफी हद तक जायज़ ठहराते हैं। इसमें दिया गया 45 एचपी का मजबूत इंजन भारी जुताई और ढुलाई जैसे कठिन कार्यों को आसानी से पूरा करता है। आधुनिक हाइड्रोलिक सिस्टम और बेहतर ट्रांसमिशन की वजह से ट्रैक्टर का संचालन बेहद स्मूथ और प्रभावी रहता है। इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर वाला मजबूत गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे खेत में काम करते समय सही स्पीड और बेहतर नियंत्रण मिलता है। इस ट्रैक्टर का प्लेटफॉर्म काफी आरामदायक और एर्गोनॉमिक डिज़ाइन वाला है, जिससे लंबे समय तक काम करने पर भी ऑपरेटर को ज्यादा थकान नहीं होती। अच्छी विजिबिलिटी और संतुलित डिजाइन इसे हर तरह के खेत के लिए उपयुक्त बनाते हैं। इंजन को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह कम ईंधन में ज्यादा काम कर सके, जिससे ऑपरेशनल लागत कम होती है। उच्च गुणवत्ता के मैटेरियल और मजबूत इंजीनियरिंग के कारण न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर अपनी ड्यूरेबिलिटी और लंबी उम्र के लिए जाना जाता है।

फ्यूल टैंक

हाइड्रोलिक क्षमता की बात करें तो न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स लगभग 1800 किलोग्राम तक वजन उठाने में सक्षम है। इसमें 42 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे बार-बार ईंधन भरने की जरूरत नहीं पड़ती और लंबा काम बिना रुकावट किया जा सकता है। माइलेज के मामले में भी यह ट्रैक्टर किफायती माना जाता है, जिससे किसान की कुल लागत कम होती है।

न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर कीमत?

कीमत की बात करें तो न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स ट्रैक्टर की एक्स-शोरूम कीमत लगभग 6.72 लाख रुपये है, जो इसके फीचर्स, परफॉर्मेंस और ब्रांड वैल्यू को देखते हुए काफी प्रतिस्पर्धी मानी जाती है। मेरिखेती (Merikheti) प्लेटफॉर्म पर किसान इस ट्रैक्टर से जुड़ी पूरी जानकारी, कीमत, रिव्यू और स्पेसिफिकेशन आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। कुल मिलाकर, न्यू हॉलैंड 3230 टीएक्स सुपर उन किसानों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है, जो शक्ति, आराम, माइलेज और विश्वसनीयता का संतुलित संयोजन चाहते हैं।

टॉप 5 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर: जानें, ट्रैक्टर की कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

बेस्ट 5 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर - किसानों की होगी आय में वृद्धि

भारत में कृषि क्षेत्र तेजी से आधुनिक तकनीकों की ओर बढ़ रहा है और इसी कड़ी में इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर किसानों के लिए एक नया और प्रभावी विकल्प बनकर उभरे हैं। बढ़ती डीज़ल कीमतें, कम ऑपरेटिंग कॉस्ट और पर्यावरण के प्रति जागरूकता ने इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों की मांग को मजबूती दी है। ये ट्रैक्टर न केवल ईंधन खर्च को कम करते हैं, बल्कि

कम मेंटेनेंस, बेहतर टॉर्क और शांत संचालन जैसे कई फायदे भी प्रदान करते हैं। आज भारतीय बाजार में कई कंपनियां अलग-अलग हॉर्सपावर रेंज में इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर पेश कर रही हैं, जो छोटे किसानों से लेकर बड़े जोत वाले किसानों की जरूरतों को पूरा करते हैं। इस लेख में हम भारत के टॉप 5 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं, जिनमें उनकी कीमत, स्पेसिफिकेशन और खास फीचर्स शामिल हैं, ताकि किसान अपने लिए सही ट्रैक्टर का चुनाव कर सकें।

1. सोनालीका टाइगर इलेक्ट्रिक

सोनालीका टाइगर इलेक्ट्रिक 15 एचपी का ट्रैक्टर हैं। खेती के हर काम जैसे जुताई, बुवाई या ट्रॉली चलाने के लिए यह एक भरोसेमंद ट्रैक्टर है। यह इलेक्ट्रो मोबिलिटी की अवधारणा को अपनाता है और 100% समय पर 100% टॉर्क देने का वादा करता है। सोनालिका टाइगर इलेक्ट्रिक कई फायदे प्रदान करता है, जो इसे प्रतिस्पर्धी बाजार में अग्रणी बनाता है। सोनालिका टाइगर इलेक्ट्रिक में जर्मन डिज़ाइन वाली E Trac मोटर है, जो उच्च ऊर्जा दक्षता और बेहतर शक्ति घनत्व प्रदान करती है। इसकी अधिकतम गति 24.93 किमी/घंटा है। इसमें 11 kW की पावर क्षमता है, जो खेतों में ट्रैक्टर के उच्च प्रदर्शन को सुनिश्चित करती है। इसमें 250-350 A की बैटरी क्षमता है, जिसे 10 घंटे में घर पर और फास्ट चार्जिंग से 4 घंटों में पूरा चार्ज किया जा सकता है। इसमें 500 किलोग्राम की लिफ्ट क्षमता है, जो किसानों को विभिन्न उपकरणों और अटैचमेंट्स का संचालन करने में सक्षम बनाती है। इसमें तेल में डूबे ब्रेक्स होते हैं, जो बेहतर वाहन सुरक्षा और नियंत्रण प्रदान करते हैं, खासकर कृषि कार्यों के दौरान। इसमें XL आकार की चौड़ी कार्यक्षेत्र और 4-तरफा समायोजन वाली सीट है, जो लंबे समय तक बिना थकान के काम करने में मदद करती है। डिज़ाइन में ट्विन बैरल हेडलाइट्स शामिल हैं, जो रात में बेहतर दृश्यता प्रदान करती हैं। इस ट्रैक्टर में 5.00 X 12 के फ्रंट टायर और 8.00 X 18 के रियर टायर कंपनी प्रदान करती है। ट्रैक्टर का कुल वजन 820 किलोग्राम दिया गया है। सोनालीका टाइगर इलेक्ट्रिक की कीमत ₹ 5.77-6.14 लाख तक है।

2. ऑटोनेक्सट एक्स45एच2

ऑटोनेक्सट एक्स45एच2 ट्रैक्टर 45 HP का एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है। ट्रैक्टर की बेटरी की पावर 32 KW है। इस बैटरी को चार्ज करने के लिए 8 घंटे का समय लगता है। ट्रैक्टर के एक बार चार्ज होने के बाद आप इससे 8 घंटे लगातार कार्य कर सकते है। इस ट्रैक्टर से आप 8 एकड़ जमीन की जुताई बिना रूके कर सकते है। इस ट्रैक्टर में फसल स्वास्थ्य विश्लेषण जैसे स्मार्ट फीचर्स का उपयोग किया गया है। जिससे किसान फसल से सम्बंधित जानकारी प्राप्त कर सकते है। ऑटोनेक्सट एक्स45एच2 ट्रैक्टर के गैरसबॉक्स में आटोमेटिक सिस्टम दिया गया है जिससे की किसानों को सुविधा मिलेगी। ऑटोनेक्सट X45H2 का स्टीयरिंग टाइप स्मार्ट इलेक्ट्रिकली कंट्रोल्ड पावर स्टीयरिंग है। ऑटोनेक्सट एक्स45एच2 में 1800 Kg वजन उठाने की मजबूत क्षमता है। ऑटोनेक्सट एक्स45एच2 ट्रैक्टर की कीमत ₹ 15.51 लाख तक है। भारतीय किसानों के बजट के अनुसार निर्धारित की गयी है। ऑटोनेक्सट X45H2 ट्रैक्टर मल्टीपल ट्रेड पैटर्न वाले टायर के साथ में आता है। ये ट्रैक्टर 2WD वेरिएंट में आता है।

3. सेलस्टियल 55 एचपी

सेलस्टियल 55 एचपी एक उन्नत और शक्तिशाली ट्रैक्टर है, जो खेती के लिए डिजाइन किया गया है। इसमें 55 hp की ताकत होती है, जो इसे विभिन्न कृषि कार्यों के लिए प्रभावी और सक्षम बनाता है। इसका डिज़ाइन आकर्षक और उपयोगकर्ता के अनुकूल है, जिससे किसानों के लिए इसे संचालित करना आसान और आरामदायक होता है। सेलस्टियल 55 एचपी ट्रैक्टर 55 हॉर्सपावर के साथ आता है। इसका इंजन क्षमता खेतों में प्रभावी माइलेज प्रदान करता है। सेलस्टियल 55 एचपी एक शक्तिशाली ट्रैक्टर है जो अच्छा माइलेज भी देता है। यह ट्रैक्टर खेतों में उच्च प्रदर्शन देने की क्षमता रखता है और इसका इंजन ऊर्जा दक्ष है। इसमें गियरबॉक्स

उत्तम दर्जे का कंपनी ने प्रदान किया है। साथ ही, इसका शानदार 30 किमी प्रति घंटा की गति है। सेलस्टियल 55 एचपी की स्टीयरिंग प्रकार स्मूथ है। यह लंबी अवधि तक खेतों में काम करने के लिए बड़ा एक लीटर ईंधन टैंक क्षमता प्रदान करता है। सेलस्टियल 55 एचपी का 4000 किलोग्राम मजबूत लिफ्टिंग क्षमता वाला ट्रैक्टर है। इस 55 HP ट्रैक्टर में प्रभावी काम के लिए कई तरह के टायर पैटर्न होते हैं। इस ट्रैक्टर की कीमत ₹ 1000000 से ₹ 1200000 है।

4. मॉन्ट्रा ई-27

मोंट्रा ई-27 एक बहुत आकर्षक और शक्तिशाली ट्रैक्टर है। मोंट्रा ई-27 ट्रैक्टर एक सफल ट्रैक्टर था। ई-27 सभी नवीनतम तकनीक के साथ खेत पर काम करने के लिए बनाया गया हैं। यहाँ हम मोंट्रा ई-27 ट्रैक्टर की सभी विशेषताओं, गुणवत्ता और उचित कीमत के बारे में जानकारी देंगे। मोंट्रा ई-27 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर शक्तिशाली 27 HP की पावर के साथ में आता हैं। इस ट्रैक्टर में आपको LFP प्रिस्मैटिक सेल्स वाली बैटरी मिलती हैं जिसकी कैपेसिटी 22.37 kWh (304AH) हैं। इस ट्रैक्टर की बैटरी को चार्ज करने के लिए 72V चार्जिंग वोल्टेज की आवश्यकता होती हैं। बैटरी की चार्जिंग क्षमता 6.3kW हैं। इस ट्रैक्टर की बैटरी के कार्य करने का समय मिट्टि की साथी और कार्य कर निर्भर करती हैं। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर मोंट्रा ई-27 के ट्रांसमिशन की बात करे तो इस ट्रैक्टर में आपको Side Shift गियर्स देखने को मिलते हैं जिसमें 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स गियर्स मिलते हैं। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर मोंट्रा ई-27 की पीटीओ की पावर 22.16 hp कंपनी द्वारा प्रदान की गयी हैं। टॉगल टाइप ड्यूल स्पीड वाली पीटीओ मॉडल इस ट्रैक्टर में आपको मिलते हैं। पीटीओ की स्पीड 540 & 1000 आरपीएम दी गयी हैं। इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर मोंट्रा ई-27 ट्रैक्टर में फ्रंट टायर्स 5.25X14 (2WD) 6X12 (4WD) और रियर टायर्स 8.3X24 (2WD & 4WD) के दिए गए हैं। इस ट्रैक्टर की कीमत ₹ 1034000 से ₹ 1034000 तक है।

5. एचएवी 50 एस 1

एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर के इंजन की बात करे तो इंजन 48 hp शक्ति के साथ लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के साथ डिज़ाइन किया गया है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर का इंजन शक्तिशाली, डीज़ल सेवर और संभाल का खर्च भी कम ही होता है। इंजन कम से कम ईंधन की खपत में पूरी शक्ति प्रदान करता है। इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें कारों वाला कूलिंग सिस्टम दिया गया है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर की फ्रंट की बात करे तो इसमें क्रोम के साथ बैच आता है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर में लाइट की बात करे तो ऑक्सलरी हेड लम्प आते है जो कार की तरह बोनट के अंदर ही आता है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर के ईंधन टैंक की क्षमता 60 लीटर है। बड़ी ईंधन क्षमता होने के कारण आप इस से लम्बे समय तक खेत में काम कर रहे है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक्स वजन उठाने की क्षमता 1800 किलोग्राम है। ढुलाई के लिए भी ये ट्रैक्टर बहुत अच्छा है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर का कुल वजन 2150 किलोग्राम है व्हील बेस की हम बात करे तो 2000mm का ट्रैक्टर का व्हील बेस आता है और ग्राउंड क्लीयरेंस 400 mm है। एचएवी 50 एस 1 ट्रैक्टर की कीमत की हम बात करे तो ये आपको 9.99 लाख रूपए तक की बाजार कीमत में मिलता है। ट्रैक्टर के नए और आकर्ष्क फीचर्स को देखते हुए ट्रैक्टर की कीमत बिलकुल किफायती है।

इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर भारतीय कृषि के भविष्य की मजबूत नींव साबित हो रहे हैं। सोनालिका टाइगर इलेक्ट्रिक जैसे किफायती और छोटे ट्रैक्टर जहां सीमांत किसानों के लिए उपयोगी हैं, वहीं ऑटोनेक्सट X45H2, सेलस्टियल 55 HP और एचएवी 50 एस 1 जैसे हाई-पावर मॉडल बड़े और व्यावसायिक खेती कार्यों के लिए बेहतर विकल्प बनते हैं। मोंट्रा ई-27 अपने आधुनिक फीचर्स और भरोसेमंद बैटरी टेक्नोलॉजी के साथ मध्यम श्रेणी के किसानों के लिए संतुलित समाधान प्रदान करता है। कम ईंधन लागत, पर्यावरण के अनुकूल तकनीक और उन्नत स्मार्ट फीचर्स के कारण आने वाले वर्षों में

इलेक्ट्रिक ट्रैक्टरों की स्वीकार्यता और बढ़ने की पूरी संभावना है। यदि किसान अपनी खेती में खर्च घटाने और आधुनिक तकनीक अपनाने की सोच रहे हैं, तो ये टॉप 5 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर एक मजबूत और टिकाऊ विकल्प साबित हो सकते हैं।

सोनालीका ट्रैक्टर्स
जीतने का दम के 30 साल और एक
प्रेरणादायक भारतीय सफलता गाथा

सोनालीका ट्रैक्टर्स: 'जीतने का दम' के 30 साल और एक प्रेरणादायक भारतीय सफलता गाथा

भारतीय कृषि मशीनरी उद्योग में सोनालीका ट्रैक्टर्स आज सिर्फ एक ब्रांड नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, साहस और किसान-प्रथम सोच का प्रतीक बन चुका है। वर्ष 1996 में पंजाब के होशियारपुर जैसे अपेक्षाकृत छोटे शहर से शुरू हुई यह यात्रा आज 1.1 अरब डॉलर मूल्य की वैश्विक ट्रैक्टर कंपनी में तब्दील हो चुकी है। वर्ष 2026 में सोनालीका किसानों के साथ अपनी साझेदारी के 30 गौरवशाली वर्ष पूरे कर रही है, जो 'जीतने का दम' के मूल मंत्र पर आधारित एक असाधारण सफर को दर्शाता है। इन तीन दशकों में सोनालीका ने न केवल भारतीय खेती को मजबूत किया है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की इंजीनियरिंग क्षमता और कृषि नवाचार की पहचान को सशक्त बनाया है। सोनालीका की यह कहानी किसी कॉरपोरेट बोर्डरूम या मल्टीनेशनल रणनीति से नहीं, बल्कि खेतों की मिट्टी, किसानों की मेहनत और उनकी वास्तविक जरूरतों से जन्मी है। इस असंभव-सी लगने वाली सफलता की नींव रखी श्री एल. डी. मित्तल ने, जिन्होंने एलआईसी से सेवानिवृत्ति के बाद आरामदायक जीवन चुनने की बजाय कुछ नया, सार्थक और राष्ट्रनिर्माण से जुड़ा कार्य करने का संकल्प लिया। उनके इस विजन में उनके दोनों पुत्र, डॉ. ए. एस. मित्तल और डॉ. दीपक मित्तल, पूरी मजबूती से जुड़े। इन तीनों ने भारतीय कृषि की असीम संभावनाओं पर भरोसा करते हुए सोनालीका को एक स्थानीय पहल से वैश्विक ब्रांड तक पहुंचाया।

किसान-प्रथम सोच से बनी एक मजबूत विरासत

सोनालीका की सफलता का मूल आधार हमेशा एक ही रहा है—भारतीय किसान को केंद्र में रखना। कंपनी का स्पष्ट दर्शन रहा कि देश के किसानों को अधिक ताकतवर, भरोसेमंद और भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप तकनीक मिलनी चाहिए। शुरुआती वर्षों में सोनालीका ने कृषि उपकरणों के निर्माण से अपनी पहचान बनाई, जहां इसके थ्रेशर ने किसानों का भरोसा जीता और खेतों में अपनी उपयोगिता साबित की। किसानों की बढ़ती मांग और जरूरतों को समझते हुए कंपनी ने ट्रैक्टर निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा। वर्ष 1996 में, जब भारतीय ट्रैक्टर उद्योग में एक जैसी डिजाइन और सीमित नवाचार देखने को मिलते थे, तब सोनालीका ने अलग रास्ता चुना। कंपनी ने ट्रैक्टरों को भारत की विविध मिट्टी, अलग-अलग फसलों और क्षेत्रीय जरूरतों के अनुसार डिजाइन किया। यही कारण है कि सोनालीका के ट्रैक्टर आज भी अपनी मजबूती, टिकाऊपन और विश्वसनीय परफॉर्मेंस के लिए पहचाने जाते हैं। यह भरोसा इस बात से भी झलकता है कि 30 साल पहले बना पहला

सोनालीका ट्रैक्टर आज भी पहले क्रैंक में स्टार्ट हो जाता है।

स्वदेशी निर्माण, तकनीकी आत्मनिर्भरता और नवाचार

भारी-भरकम और क्षेत्र-विशेष ट्रैक्टरों की बढ़ती मांग को देखते हुए, सोनालीका ने वर्ष 2011 से वर्टिकल इंटीग्रेशन की रणनीति को अपनाया। इसके तहत कंपनी ने इंजन, ट्रांसमिशन, गियरबॉक्स और अन्य प्रमुख पार्ट्स का इन-हाउस निर्माण शुरू किया। इस कदम ने सोनालीका को तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनाया और उच्च हॉर्स पावर वाले ट्रैक्टर विकसित करने में मदद की। इतना ही नहीं, एंट्री-लेवल ट्रैक्टरों में भी बड़े इंजन, पावर स्टीयरिंग, ऑयल-इमर्स्ड ब्रेक और मल्टी-स्पीड ट्रांसमिशन जैसे प्रीमियम फीचर्स शामिल किए गए। कंपनी ने क्षेत्रीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए विशेष ट्रैक्टर भी लॉन्च किए, जैसे दक्षिण भारत के लिए 'महाबली', महाराष्ट्र के लिए 'छत्रपति' और राजस्थान के लिए 'महाराजा'। इसके साथ ही 70 से अधिक कृषि उपकरणों की विस्तृत श्रृंखला ने किसानों की उत्पादकता, समय बचत और लागत दक्षता को नई दिशा दी।

वैश्विक मंच पर भारतीय ब्रांड की मजबूत पहचान

सोनालीका की सफलता की कहानी भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रही। वर्ष 2004 में पहला ट्रैक्टर निर्यात करने के बाद, 2011 में सोनालीका यूरोप को ट्रैक्टर निर्यात करने वाली पहली भारतीय ट्रैक्टर ब्रांड बनी। आज कंपनी एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका सहित 150 से अधिक देशों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। वित्त वर्ष 2019 से सोनालीका भारत से ट्रैक्टर निर्यात में लगातार नंबर 1 ब्रांड बनी हुई है। वर्तमान में भारत से निर्यात होने वाला हर तीसरा ट्रैक्टर सोनालीका के होशियारपुर स्थित अत्याधुनिक प्लांट में निर्मित होता है। वैश्विक बाजार में करीब 30% एक्सपोर्ट शेयर के साथ सोनालीका ने यह साबित किया है कि भारतीय ब्रांड अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गुणवत्ता और प्रदर्शन में किसी से कम नहीं हैं।

पारदर्शिता, भरोसा और भविष्य की मजबूत तैयारी

सोनालीका ने ट्रैक्टर उद्योग में पारदर्शिता की एक नई मिसाल पेश की है। वर्ष 2022 में कंपनी ने अपनी वेबसाइट पर ट्रैक्टरों की कीमतें सार्वजनिक कीं और 2025 में सर्विस व मेंटेनेंस खर्च की जानकारी भी किसानों के लिए उपलब्ध कराई। इस पहल ने किसानों के बीच भरोसे को और मजबूत किया। भविष्य की ओर देखते हुए सोनालीका अपनी उत्पादन क्षमता को 3 लाख ट्रैक्टर प्रति वर्ष तक बढ़ाने की दिशा में तेजी से काम कर रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, कनेक्टेड डायग्नोस्टिक्स और पर्सनलाइज्ड रिटेल अनुभव के माध्यम से कंपनी किसानों के साथ अपने रिश्ते को और गहरा बना रही है। मजबूत नेतृत्व, तकनीकी आत्मनिर्भरता और किसान-प्रथम सोच के साथ सोनालीका के अगले 30 साल भी वैश्विक कृषि मशीनीकरण में भारत की ताकत को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प रखते हैं।

बकरी पालन लोन योजना: किसानों को बकरी पालन पर मिलेगी 50 लाख का लोन

किसानों को बकरी पालन के लिए बैंक से मिलेगा 50 लाख तक लोन

किसानों की आय बढ़ाने और युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से सरकार लगातार कई प्रकार की योजनाएं चला रही है, जिनमें बकरी पालन योजना (Bakri Palan Yojana) सबसे अधिक प्रभावशाली मानी जा रही है। बदलते समय में खेती-किसानी के साथ पशुपालन एक मजबूत और स्थायी विकल्प बनकर उभरा है। खासकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए बकरी पालन ऐसा व्यवसाय है, जिसे कम संसाधनों में शुरू किया जा सकता है और जिससे अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। बकरी पालन न केवल आर्थिक मजबूती प्रदान करता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर भी पैदा करता है। यह व्यवसाय गांवों से हो रहे पलायन को रोकने में भी सहायक साबित हो सकता है।

कम लागत में शुरू होने वाला लाभदायक व्यवसाय

यदि आप कम पूंजी में कोई ऐसा व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं, जिसमें जोखिम कम हो और मुनाफे की संभावना ज्यादा हो, तो बकरी पालन आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प है। बकरी पालन के लिए बहुत अधिक जमीन या भारी-भरकम ढांचे की जरूरत नहीं होती। थोड़ी सी सही योजना, उचित नस्ल का चयन, संतुलित आहार और समय-समय पर पशु चिकित्सा देखभाल से यह व्यवसाय तेजी से आगे बढ़ सकता है। सरकार और बैंक दोनों की मदद से अब बकरी पालन शुरू करना पहले से कहीं ज्यादा आसान हो गया है। सही प्रशिक्षण और मार्गदर्शन मिलने पर यह व्यवसाय लंबे समय तक स्थायी आय का स्रोत बन सकता है।

बकरी पालन के लिए 50 लाख रुपये तक का बैंक लोन

अब बकरी पालन व्यवसाय (Goat Farming Loan Yojana) शुरू करने के लिए 50 हजार रुपये से लेकर 50 लाख रुपये तक का बैंक लोन लिया जा सकता है। कई सरकारी और निजी बैंक इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाओं के तहत लोन उपलब्ध करा रहे हैं। लोन की राशि आपके प्रोजेक्ट के आकार, बिजनेस प्लान, फार्म की

क्षमता और आपके क्रेडिट स्कोर पर निर्भर करती है। छोटे स्तर पर शुरुआत करने वालों को कम राशि में भी सहायता मिल जाती है, जबकि बड़े स्तर पर फार्म खोलने वालों को ज्यादा लोन की सुविधा दी जाती है। इससे हर वर्ग का व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार बकरी पालन शुरू कर सकता है।

कौन ले सकता है बकरी पालन लोन

बकरी पालन लोन (Goat Farming Loan) के लिए कुछ आवश्यक शर्तें तय की गई हैं। आवेदक का भारतीय नागरिक होना जरूरी है और उसकी आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। इसके साथ ही एक अच्छी और व्यवहारिक प्रोजेक्ट रिपोर्ट होना अनिवार्य है, जिसमें लागत, लाभ, खर्च और आय का स्पष्ट विवरण हो। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को इस योजना में प्राथमिकता दी जाती है। इसके अलावा आवेदक के पास पशुपालन का अनुभव होना चाहिए या किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से बकरी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। SC, ST और OBC वर्ग के लोगों को विशेष सब्सिडी का लाभ दिया जाता है, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से अधिक सहायता मिलती है।

किन बैंकों से मिलता है बकरी पालन लोन

भारत में कई बैंक बकरी पालन के लिए लोन उपलब्ध कराते हैं। IDBI बैंक 50 हजार से 50 लाख रुपये तक का लोन देता है, जिसमें जमीन या किसी गारंटी की आवश्यकता होती है। SBI भी बकरी पालन के लिए लोन प्रदान करता है, जहां अच्छी तरह से तैयार की गई प्रोजेक्ट रिपोर्ट अनिवार्य होती है। Canara Bank ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष योजनाओं के अंतर्गत बकरी पालन पर लोन और सब्सिडी की सुविधा देता है। इसके अलावा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सहकारी बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाएं भी बकरी पालन के लिए ऋण उपलब्ध कराती हैं।

NABARD योजना के तहत लोन और सब्सिडी

NABARD सीधे लोन नहीं देता, बल्कि विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों के माध्यम से बकरी पालन के लिए लोन और सब्सिडी उपलब्ध कराता है। NABARD योजना के तहत 25% से 35% तक की सब्सिडी दी जाती है। महिलाओं और SC/ST वर्ग के लाभार्थियों को अतिरिक्त सहायता भी प्रदान की जाती है। सब्सिडी की राशि सीधे बैंक को ट्रांसफर कर दी जाती है, जिससे लोन की कुल राशि कम हो जाती है और लाभार्थी पर वित्तीय बोझ घटता है। इससे ऋण चुकाने में भी काफी आसानी होती है।

बकरी पालन लोन के लिए आवेदन प्रक्रिया

बकरी पालन लोन के लिए आवेदन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से किया जा सकता है। SBI, IDBI जैसे बैंक अपनी वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन की सुविधा देते हैं। वहीं अन्य बैंकों की शाखा में जाकर ऑफलाइन आवेदन फॉर्म भी भरा जा सकता है। आवेदन के साथ सभी जरूरी दस्तावेज संलग्न करने होते हैं। इसके बाद बैंक द्वारा आवेदक के दस्तावेजों और प्रोजेक्ट रिपोर्ट की जांच की जाती है। सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने के बाद, यदि सब कुछ सही पाया जाता है, तो लोन स्वीकृत कर दिया जाता है।

लोन आवेदन के लिए जरूरी दस्तावेज

बकरी पालन लोन के लिए आधार कार्ड या वोटर आईडी, निवास प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, बैंक खाता विवरण, जमीन के कागजात (यदि उपलब्ध हों) और एक विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट जरूरी होती है। इन दस्तावेजों के आधार पर बैंक आपकी पात्रता तय करता है और लोन की राशि निर्धारित करता है। सही और पूरे दस्तावेज होने से लोन स्वीकृति की प्रक्रिया तेज हो जाती है।

बकरी पालन व्यवसाय के मुख्य लाभ

बकरी पालन कम जमीन और कम लागत में शुरू

किया जा सकता है। इससे दूध, मांस और जैविक खाद प्राप्त होती है, जिनकी बाजार में अच्छी मांग रहती है। यह ग्रामीण बेरोजगार युवाओं और किसानों के लिए रोजगार का बेहतरीन साधन है। सही नस्ल का चयन, संतुलित आहार और बेहतर प्रबंधन से मुनाफा कई गुना तक बढ़ाया जा सकता है। यह व्यवसाय जोखिम कम और लाभ अधिक देने वाला माना जाता है।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक मजबूत कदम

बकरी पालन लोन और सब्सिडी योजनाएं किसानों और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह योजना न केवल आर्थिक सशक्तिकरण करती है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करती है। बकरी पालन के माध्यम से लोग अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं और देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अपना योगदान दे सकते हैं।

साहिवाल गाय - भारत की सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाले देसी गाय की नस्ल

भारत में देसी गायों की अनेक नस्ले पाई जाती है जो की पशुपालकों द्वारा पाली जाती है , जिन में से साहिवाल गाय भारत की सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाले देसी गाय की नस्ल है। ये गाय एक ब्यात में 4500 किलोग्राम तक दूध का उत्पादन करती है। साहिवाल गाय को डेयरी उद्योग में नगीने की तरह देखा जाता है। आज के इस लेख में हम आपको साहिवाल गाय से जुडी सम्पूर्ण जानकारी देंगे जिससे की आपको इस नस्ल के बारे में अधिक पता चलेगा।

साहिवाल गाय का नाम साहीवाल कैसे पड़ा

इस नस्ल का नाम पाकिस्तान के पंजाब राज्य के मोंटगोमरी जिले के साहीवाल क्षेत्र से लिया गया है। साहीवाल गाय का नाम पाकिस्तान के साहिवाल जिले के ऊपर ही रखा गया है साहिवाल गाय भारत में पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में अधिक पाली जाती है।

साहिवाल गाय दिखने में कैसी होती है

शुद्ध साहिवाल गाय की पहचान करना कई लोगों के लिए एक जिज्ञासा का विषय होता है। इसे मुख्यतः उसके रंग और शरीर की बनावट से पहचाना जा सकता है। आमतौर पर शुद्ध साहिवाल गाय का रंग लाल से भूरे के बीच होता है। इसकी टांगें अपेक्षाकृत छोटी होती हैं और सिर थोड़ा चौड़ा दिखाई देता है। इस नस्ल की गायों की पीठ पर कूबड़ (हम्प) अच्छी तरह विकसित होता है और गले के नीचे की खाल ढीली होकर लटकी रहती है। विशेषज्ञों का कहना है कि शुद्ध नस्ल की साहिवाल गाय विशेष रूप से पंजाब और फिरोजपुर जैसे क्षेत्रों में पाई जाती है। वजन की बात करें तो इन गायों का भार लगभग 300 से 400 किलोग्राम तक हो सकता है।

साहिवाल गाय का दूध उत्पादन

साहिवाल गाय का दूध महंगा क्यों है, एक दिन में कितना लीटर दूध देती है और इसमें क्या खास है, जैसे कई लोग सोचते हैं। नीचे इन सभी प्रश्नों पर विस्तार से उत्तर दिए गए हैं।

साहिवाल गाय एक दिन में 10 से 16 लीटर तक दूध दे देती है इनके अलावा अच्छा दूध उत्पादन करने वाली गाय एक दिन में 20 - 25 लीटर तक भी दूध दे सकती है।

साहिवाल गाय का दूध A2 होता है और स्वाद में मीठा होता है।

राठी गाय: एक अमूल्य भारतीय नस्ल

भारतीय देसी गायों में राठी नस्ल एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह एक अत्यंत सुंदर और उच्च दूध उत्पादन करने वाली नस्ल है। दुर्भाग्यवश, विदेशी गायों के बढ़ते प्रभाव के चलते हम अपनी देसी नस्लों को भूलते जा रहे हैं। राठी जैसी कई अन्य भारतीय नस्लें भी धीरे-धीरे लुप्त होने के कगार पर हैं। हजारों वर्षों में प्राकृतिक रूप से विकसित हुई इन गायों में अनूठे गुण पाए जाते हैं। यह किसी प्रयोगशाला में निर्मित नस्ल नहीं है, बल्कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक अनमोल उपहार है। भारत की मिट्टी में जन्मी और पली-बढ़ी ये नस्लें हमारे लिए अमूल्य धरोहर हैं।

राठी गायों का मूल स्थान कहा है

राठी गायों की उत्पत्ति राजस्थान में हुई है। यह मुख्य रूप से चितकबरे रंग की होती है और इसकी शारीरिक बनावट साहीवाल गाय से मिलती-जुलती है, जबकि रंग गीर और डांगी नस्ल के समान होता है।

बीकानेर जिले के लूणकरसर क्षेत्र को राठी गायों का मूल स्थान माना जाता है। ये गायें झुंड में रहने वाली होती हैं और दिनभर कई किलोमीटर तक विचरण करती हैं।

अत्यधिक गर्मी सहन करने की इनकी क्षमता अद्भुत होती है। सीमित भोजन और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, यह प्रतिदिन 10 से 20 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती हैं।

इस नस्ल को पालने वाले गौपालकों को 'राठ' कहा जाता है। कभी इन गायों के झुंड राजस्थान के बड़े हिस्से में देखे जा सकते थे, लेकिन अब इनकी संख्या तेजी से घट रही है।

राठी नस्ल की घटती संख्या के कारण

राठी गायों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है, जिसका मुख्य कारण इनका अन्य राज्यों में पलायन है। अच्छी गुणवत्ता वाली राठी गायों को दूर-दराज के क्षेत्रों में ले जाया गया, जिससे स्थानीय स्तर पर इनकी उपलब्धता कम हो गई।

इसके अलावा, राठी नस्ल के नंदी (बैल) की अनुपलब्धता भी इस नस्ल के प्रजनन में बाधा बन रही है। गौपालकों को राठी नस्ल के महत्व के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।

इस दिशा में दिल्ली के दिव्य धाम आश्रम की कामधेनु गौशाला महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और राठी नस्ल के संरक्षण के प्रयास कर रही है।

राठी नंदी का महत्व

किसी भी नस्ल को बचाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले नंदी का चयन अत्यंत आवश्यक है। हालांकि बीकानेर क्षेत्र में राठी नंदी आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन उनकी वंशावली अज्ञात होने के कारण उन्हें नस्ल सुधार कार्यक्रमों में उपयोग नहीं किया जा सकता। कामधेनु गौशाला ने वर्षों की खोज के बाद दो शुद्ध राठी नंदी खोज निकाले हैं, जिनमें से एक ने सीमेन (वीर्य) देना भी शुरू कर दिया है। इन नंदियों

की सहायता से राठी नस्ल के संरक्षण में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा।

सरकार के द्वारा चालाए गए राठी नस्ल संरक्षण कार्य

राजस्थान सरकार ने बीकानेर और नोहर में राठी नस्ल के संरक्षण और संवर्धन के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं। हालांकि, इस दिशा में और अधिक ठोस कदम उठाने की जरूरत है।

राठी नस्ल भारतीय संस्कृति और कृषि विरासत का हिस्सा है, जिसे बचाना हमारा दायित्व है। नस्ल की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ इसकी गुणवत्ता पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

इसके लिए उचित प्रजनन प्रक्रिया अपनाकर उच्च गुणवत्ता वाली गायों को संरक्षित किया जाना चाहिए।

कई गौपालकों का ध्यान केवल इस बात पर होता है कि गाय गर्भवती हो और दूध देना शुरू करे, लेकिन वे यह सुनिश्चित नहीं करते कि नवजात बछड़ा या बछड़ी नस्ल के मानकों को पूरा करता है या नहीं।

हमें केवल वर्तमान की चिंता तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि भविष्य को सुरक्षित रखने के प्रयास भी करने चाहिए।

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010